सांध्य दैनिक

4PM

आप मित्र बदल सकते हैं पर पड़ोसी नहीं।
-अटल बिहारी वाजपेयी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

• वर्षः 12 • अंक 200 पृष्ठः 8 • लखनऊ, गुरुवार 27 अगस्त, 2026

टेस्ट रैंकिंग में मिचेल स्टार्क बने... 7 | कॉकरोच साफ करेंगे सियासी... 3 | पश्चिमी यूपी में आपत्तिजनक पोस्टर... 2

सीएम योगी का ताज, एपको वाले अनिल सिंह के दाग!

दागों के दस्तावेज के सहारे अनिल सिंह का हजारों करोड़ का आर्थिक सफर

» सवाल उठाती सीएम योगी की ताज पैलेस होटल की वायरल तस्वीरें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। होटल नया है ताज चमक रहा है झूमर जगमगा रहे हैं और तस्वीरों में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुस्कुरा रहे हैं। लेकिन इन चमकती तस्वीरों के पीछे एक ऐसा सवाल खड़ा है जिसे सिर्फ इसलिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि सामने पांच सितारा होटल की चमक है।

इंफ्रास्ट्रक्चर की दुनिया के बड़े कारोबारी यूपी के सबसे अमीर व्यक्ति का तमगा हासिल कर चुके अनिल कुमार सिंह के एक हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की लागत से बने भव्य होटल ताज पैलेस का उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया और इस मौके पर वह भी मौजूद रहे। वही अनिल कुमार सिंह जो एपको इन्फ्राटेक के संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं और जिनका कारोबारी साम्राज्य सड़क एक्सप्रेसवे और बड़े सरकारी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्टों तक फैला हुआ है।

आयात शुल्क के हेराफेरी के आरोप

अनिल सिंह पर हाट मिक्स प्लांट को विदेश से लाने में आयात शुल्क के हेराफेरी के साथ तमाम बड़े प्रोजेक्ट में गलत तरीकों से काम करने के आरोप लगे हैं। अनिल सिंह और एनएचएआई के बीच भ्रष्टाचार जैसे विवाद आदलती प्रक्रियाओं का हिस्सा है और सुनवाई के इंतजार में लंबित चल रहे। सवाल उठ रहे है कि क्या सीएम योगी आदित्यनाथ को अनिल सिंह के साथ फोटो खिचवानी चाहिए थी। जिस कारोबारी व्यक्ति पर तरह तरह के संगीन आरोप हो उस व्यक्ति के होटल के उद्घाटन में पहुंचना चाहिए था। क्योंकि दागदार व्यक्तियों की छवि से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बचना चाहिए था।

लोकतंत्र मे सवाल पूछने के लिए दोषसिद्धि का इंतजार नहीं किया जाता

यहां आरोपों को फैसला मान लेने की जल्दबाजी नहीं होनी चाहिए। अदालत में मामला लंबित होना दोष सिद्ध होना नहीं होता और कारोबारी विवाद अपने आप में भ्रष्टाचार का प्रमाण भी नहीं है। लेकिन लोकतंत्र में सवाल पूछने के लिए हमेशा दोषसिद्धि का इंतजार भी नहीं किया जाता। खासकर तब जब एक तरफ योगी सरकार भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस का दावा करती हो और दूसरी तरफ मुख्यमंत्री की मौजूदगी वाली तस्वीर ऐसे कारोबारी के प्रतिष्ठान से जुड़ती हो जिसपर अनैतिका के आरापों का अंबार लदा हो। अनिल सिंह के कारोबारी सफर और सरकारी परियोजनाओं को लेकर सवाल सार्वजनिक रिकॉर्ड में मौजूद हैं तो फिर आखिर मुख्यमंत्री की मौजूदगी सिर्फ निवेश को प्रोत्साहन देने की कवायद थी या सरकार की तरफ से कारोबारी प्रतिष्ठा पर सार्वजनिक मुहर भी? क्या मुख्यमंत्री कार्यालय ने इस कार्यक्रम से पहले संबंधित कारोबारी के विवादों और कानूनी मामलों की पड़ताल की थी? और अगर की थी तो क्या सामने आया? सवाल तब और बड़ा हो जाता है जब उसी कारोबारी के भव्य होटल का उद्घाटन प्रदेश के मुख्यमंत्री अपने हाथों से करते हैं। क्या मुख्यमंत्री कार्यालय को ऐसे पुराने न्यायिक रिकॉर्ड की जानकारी थी? अगर थी तो क्या उसे महज कारोबारी विवाद मानकर नजरअंदाज किया गया? और अगर जानकारी नहीं थी तो फिर सवाल और गंभीर है कि इतने बड़े कारोबारी के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री की मौजूदगी से पहले सरकार की जांच पड़ताल का पैमाना आखिर क्या है?

एपको के कारोबारी सम्राज्य से जुड़े सवालों पर सरकार के पास क्या जवाब है?

लखनऊ के भव्य होटल ताज पैलेस की इमारत पर रोशनी बहुत है लेकिन लोकतंत्र में असली रोशनी उन सवालों पर पड़नी चाहिए जो चमकती तस्वीर के पीछे छूट जाते हैं। अनिल सिंह का होटल कितना भव्य है यह देखने के लिए कैमरे काफी हैं। अब सवाल यह है कि एपको के कारोबारी साम्राज्य से जुड़े सवालों पर सरकार के पास क्या जवाब है। क्योंकि मामला सिर्फ एक होटल के उद्घाटन का नहीं है। मामला उस तस्वीर का है जिसमें सत्ता और बड़े कारोबार की नजदीकी साफ दिखाई दे रही है। और जब तस्वीर में मुख्यमंत्री हों तो सवाल भी मुख्यमंत्री से ही पूछे जाएंगे। क्योंकि योगी आदित्यनाथ सिर्फ किसी कारोबारी के मेहमान बनकर वहां नहीं पहुंचे थे। मुख्यमंत्री की तस्वीर जहां जाती है वहां सत्ता का संदेश भी जाता है। ऐसे में ताज पैलेस की चमक से ज्यादा महत्वपूर्ण वह सवाल है जो अब प्रदेश की सियासत में तैर रहे हैं कि क्या मुख्यमंत्री ने सिर्फ होटल देखा या उस कारोबारी की पूरी फाइल भी देखी थी? अगर फाइल देखी थी तो फिर सवालों का जवाब क्या है? और अगर नहीं देखी थी तो फिर इतनी बड़ी राजनीतिक तस्वीर बनने से पहले सरकार ने होमवर्क क्यों नहीं किया क्योकि होटल ताज पैलेस की चमक कुछ घंटों की है लेकिन दस्तावेज सालों तक रहते हैं। और अब सवाल यही है कि उद्घाटन की तस्वीर बड़ी है या एपको की फाइल?

भाजपा सरकार में तो नारी केवल नारा बनकर रह गई है: अखिलेश

» 2027 विस चुनाव में महिलाओं को भाजपा से ज्यादा टिकट देगी सपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव आगामी विस चुनाव के लिए कमर कसना शुरू कर दिए हैं। भाजपा को सत्ता में आने से रोकने के लिए अब उन्होंने महिलाओं को अपने पक्ष में करने के लिए उनके लिए कई योजनाओं की घोषणा की है। उन्होंने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार में तो नारी केवल नारा बनकर रह गई है और उनकी पार्टी 27 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में महिलाओं को भाजपा से अधिक टिकट देगी।

यादव ने उत्तर प्रदेश में सत्ता में आने पर स्त्री सम्मान समृद्धि योजना शुरू करने की घोषणा करने के लिए यहां सपा मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, 'भारतीय जनता पार्टी सरकार में तो नारी केवल नारा बनकर रह गई है।' उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण कानून पहले ही पारित हो चुका है और सवाल किया कि भाजपा सरकार इसे लागू करने में देरी क्यों कर रही है। यादव ने कहा, महिला आरक्षण पारित हो चुका है। भारतीय जनता पार्टी क्यों देरी कर रही है? यादव ने मांग की कि भाजपा महिला आरक्षण कानून को अगले चुनाव में लागू करे। उन्होंने कहा कि अगर सरकार रक्षा बंधन के अवसर पर विशेष उपायों की घोषणा कर सकती है और बसें चला सकती है, तो उसे महिला आरक्षण लागू करने के बारे में भी ईमानदार होना चाहिए। उन्होंने कहा, अगर कोई ऐसी जगह है जहां बेटियों के साथ सबसे ज्यादा अन्याय हो रहा है, तो वह उत्तर प्रदेश है। अगर आप सभी तरह की घटनाओं को देखें, तो उनमें से ज्यादातर ऊंची जाति की आबादी के साथ हो रही हैं। पार्टी द्वारा घोषित स्त्री सम्मान समृद्धि योजना का उल्लेख करते हुए यादव ने कहा कि सपा इस योजना को लोगों तक ले जाएगी और 2027 के चुनाव के लिए अपने घोषणापत्र में अपनी प्रतिबद्धताओं को शामिल करेगी। यादव ने आंगनवाड़ी केंद्रों की स्थिति की भी आलोचना की और पिछले दशक में केंद्र और उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकारों के प्रदर्शन पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, अगर आप आंगनबाड़ियों के संबंध में सामने आ रहे आंकड़ों को देखेंगे तो आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि 'डबल-इंजन' सरकार ने उनके साथ क्या किया है।

सपा सरकार में महिलाओं को 40 हजार रुपये मिलेंगे

उन्होंने कहा कि हाल ही में एक जापानी प्रतिनिधिमंडल को महिला सुरक्षा उपायों के उदाहरण के रूप में 1090 प्रणाली भी दिखाई गई थी। उन्होंने कहा, मैं महिलाओं को आश्वस्त कर सकता हूं कि समाजवादी पार्टी सरकार में उनकी सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। प्रस्तावित योजना का जिक्र करते हुए यादव ने कहा कि प्रस्तावित योजना के तहत महिलाओं को हर साल 40 हजार रुपये मिलेंगे, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत होने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा, यह आधी आबादी की पूर्ण आजादी का संकल्प है। यादव ने महिलाओं के लिए समाजवादी सरकार की पेंशन योजना को भी याद किया, जिसके तहत 500 रुपये सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित किए गए थे, उन्होंने कहा कि पार्टी ने इस राशि को उत्तरोत्तर बढ़ाने की योजना बनाई थी।

अंकित बालियान की हत्या पर भड़के अखिलेश

उत्तर प्रदेश के शामली में लोकप्रिय गायक अंकित बालियान की हत्या के मामले पर सियासत गर्म हो गई हैं. सिंगर की जिस तरह सरेआम हत्या की गई उसे लेकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर निशाना साधा है और प्रदेश की कानून-व्यवस्था सवाल उठाए हैं। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, उप्र की कानून-व्यवस्था को शून्य करते हुए जिस प्रकार शामली में लोकप्रिय गायक अंकित बालियान की 18 राउंड गोलियां चलाकर बेरहमी से हत्या की गई है, उससे पूरे क्षेत्र में भय व्याप्त हो गया है। सपा मुखिया ने आगे कहा कि, मृतक की दुखी मां के द्वारा अपने बेटे के शव को गोद में रखकर सड़क पर ही शोकाकुल होने का समाचार हृदयविदारक है. जाट समाज ने हमलावरों की गिरफ्तारी को लेकर सड़क पर ही अपनी मांग बुलंद की है. यूपी का समस्त जाट समुदाय इसे अपने ऊपर प्रहार मानकर आक्रोशित है. इस हत्याकांड की जांच राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के दृष्टिकोण से भी किए जाने की मांग उठ रही है. बेहद निंदनीय।

सपा के फैसले से बीजेपी के हाथ-पांव फूल गए : शिवपाल

सपा द्वारा महिलाओं को 40 हजार रुपये देने केवादे पर भारतीय जनता पार्टी के नेता और उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उनकी प्रतिक्रिया पर अब जसवंतनगर से विधायक और सपा नेता शिवपाल सिंह यादव ने जवाब देते हुए कहा है कि बीजेपी के हाथ पांव फूल गए। दरअसल, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि सपा के मुंह से महिला सुरक्षा-सम्मान की बात महज छलावा है यूपी ने 12-17 के दरम्यान सपा की गुंडागर्दी, अपराध, माफिया, दंगाइयों और भ्रष्टाचारियों के संरक्षण वाली राजनीति न केवल देखी है, बल्कि काफी हद तक सही भी है। यह क़तई साफ है कि सपा मुखिया अखिलेश यादव को 27 से 47 तक यूपी की सत्ता और उनके दिल्ली वाले गार्जियन कांग्रेस के जेन-जी नेता राहुल गांधी को 049 तक देश की सत्ता मिलने वाली नहीं है। दोनों भविष्य के नाम पर फ़र्जी वादे बेच रहे है। इसके जवाब में शिवपाल सिंह यादव ने एक्स पर लिखा कि शिवपाल सिंह यादव ने केशव के पोस्ट पर कहा कि- वाह भाजपा ! महिलाओं के हाथ में 40 हजार पहुँचाने की बात हुई तो भाजपा के नेताओं के हाथ-पाँव फूल गए। उपमुख्यमंत्री जी ,महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी तो आपको इतनी तकलीफ क्यों? महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान और आर्थिक मजबूती देने की समाजवादी सोच से घबराने के बजाय भाजपा सरकार अपने वर्षों का महिला सुरक्षा और रोजगार का हिसाब द अब महिलाएँ सवाल भी पूछेंगी और जवाब भी लेंगी आप से।

बंद किए गए 30 हजार स्कूलों को दोबारा खोले यूपी सरकार

» एक लाख नौकरियों के वादे पर बसपा प्रमुख ने योगी सरकार से की अपील

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि योगी सरकार की ओर से यूपी के एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने की घोषणा एक सही निर्णय है पर ये कदम चुनावी अधिक लगता है। उन्होंने शिक्षक भर्ती के लिए आंदोलनरत छात्रों की भी सुनने के लिए सरकार से अपील की है। वहीं, प्रदेश में बंद किए गए 30 हजार स्कूलों को खुलवाने की भी अपील की है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अगले छह महीने में (अर्थात विधानसभा आमचुनाव तक) एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने की घोषणा हालांकि विलम्ब से उठाया गया सही किन्तु चुनावी कदम ज्यादा लगता है फिर भी वे नियुक्तियां पेपरलीक व भ्रष्टाचार आदि के अभिशाप से मुक्त समय से पूरा हो जायें तो यह सही होगा ताकि यह चुनावी छलावा ना साबित हो। यूपी सहित पूरे देश भर में स्कूली शिक्षा की बदहाल व्यवस्था को समुचित तौर पर बेहतर बनाने की माँग लगातार करती रहती है, किन्तु संभवत: 'जेन-जी' व 'जेन-अल्फा' के दबाव में जो थोड़ी अनचाही हलचल सरकारी स्तर पर देखने को मिल रही है वह मामूली ही सही परन्तु स्कूली शिक्षा में सुधार करने की सही नीयत से हो तो यह उचित होगा और इस क्रम में यहाँ लगभग ३० हज़ार जो सरकारी स्कूल बंद कर दिये गये हैं उन्हें दोबारा खोलने तरीके से सक्रिय करने की व्यवस्था सरकार अविलम्ब करे तो यह भी जनहित में होगा। इसके अलावा, बुजुर्ग महिलाओं को बसों में निशुल्क यात्रा आदि की व्यवस्था से कहीं अधिक महिलाओं को हर क्षेत्र में शोषण, अत्याचार, उत्पीड़न आदि से बचाने के साथ ही महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व आत्मनिर्भरता के बारे में भी सरकारों को सही नीयत व नीति से कार्य करने की ज़रूरत है।

बसपा सुप्रीमो मायावती ने लिखा- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अगले छह महीने में (अर्थात विधानसभा आमचुनाव तक) एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने की घोषणा हालाँकि विलम्ब से उठाया गया सही किन्तु चुनावी क़दम ज़्यादा लगता है।

नियुक्तियां पेपर लीक व भ्रष्टाचार आदि के अभिशाप से मुक्त हो

फिर भी वे नियुक्तियां पेपर लीक व भ्रष्टाचार आदि के अभिशाप से मुक्त समय से पूरा हो जायें तो यह सही होगा ताकि यह चुनावी छलावा ना साबित हो, जबकि इसके साथ ही एससी, एसटी व ओबीसी समाज के आरक्षित पदों के बैकलाग पर भर्तियों के बारे में भी सरकारी घोषणा की लोगों को उत्सुकता से प्रतीक्षा है। बसपा सुप्रीमो ने आगे लिखा- इतना ही नहीं बल्कि यहां 69,हजार शिक्षक भर्ती में आरक्षण के नियमों को लेकर इन वर्गों के 6,800 अभ्यार्थी अपनी नियुक्ति के लिये भूखे-प्यासे लगातार आन्दोलनरत हैं, उनके बारे में भी सरकार को पूरी सहानुभूतिपूर्वक ज़रूर सोचना चाहिये, क्योंकि उन्हें वास्तविक राहत सरकार ही दे सकती है।

पार्कों की देखभाल में पार्षद की मंजूरी जरूरी, तानाशाही : देवेंद्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने एमसीडी के पार्कों के रखरखाव और विकास के लिए आरडब्ल्यूए को स्थानीय पार्षद या महापौर की मंजूरी अनिवार्य किए जाने के फैसले को तानाशाहीपूर्ण और पीछे ले जाने वाला कदम बताया है।

उन्होंने कहा कि इससे नागरिकों की भागीदारी कम होगी और पार्कों की देखभाल में अनावश्यक देरी हो सकती है। यादव ने कहा कि जब दिल्ली में कांग्रेस सत्ता में थी, तब भागीदारी योजना के माध्यम से आरडब्ल्यूए को सामाजिक कार्यों और आसपास की सफाई में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। आरोप लगाया कि इस व्यवस्था से आरडब्ल्यूए के काम में राजनीतिक हस्तक्षेप बढ़ेगा और भ्रष्टाचार की आशंका भी पैदा होगी। यादव के अनुसार, कई पार्षद अपने वार्ड की जिम्मेदारियों को ही पूरी तरह नहीं निभा पा रहे हैं, ऐसे में उन पर अतिरिक्त जिम्मेदारी डालना उचित नहीं है।

भाजपा ने निषाद समाज का अपमान किया : अजय राय

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बोले- सबकुछ सीएम-पीएम के संरक्षण में हो रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संरक्षण में उनके लोगों द्वारा पूरे निषाद समाज को गालियां दी जा रही हैं। भाजपा ने निषाद समाज का अपमान किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस प्रवक्ता को जिस प्रकार चैनल पर लाइव प्रसारण में गालियां व धमकी भाजपा समर्थित राजू दास द्वारा दी गयी और अभी तक राजू दास पर अभी तक एफआईआर नहीं दर्ज की गयी, इससे स्पष्ट है कि राजू दास को प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का संरक्षण प्राप्त है। इनके संरक्षण में निषाद समाज के नेताओं को गालियां दिलायी जा रही है।

उन्होंने कहा कि चकिया में डेढ़ साल की बच्ची से दुष्कर्म, जौनपुर में 3 वर्ष की बच्ची के साथ दुष्कर्म, गाजियाबाद में बच्ची के साथ दुष्कर्म, गोरखपुर में 10 वर्ष की बच्ची को सिपाही द्वारा अगवा कर दुष्कर्म और हत्या की गयी, क्या इन घटनाओं में एन्काउण्टर-हाफ एनकाउंटर या बुलडोजर की कार्यवाही हुई? कांग्रेस ने निषाद समाज को तालाब, नौका घाट, बालू घाट और जमीन के पट्टे दिये जिसे भाजपा ने छीनने का काम किया। अब उनके पारंपरिक भोजन पर भी सवाल खड़ा कर उसे भी छीनने का काम कर रही है।

मुख्यमंत्री अब दिन-रात झूठ बोलते हैं

उन्होंने कहा कि चढ़ावा चोरी पर दूध का दूध-पानी का पानी, जैसा झूठा बयान देने वाले मुख्यमंत्री को यही निषाद समाज 27 के विधानसभा चुनाव में दूध का दूध और पानी का पानी का असली अर्थ समझाने का काम करेगा। उन्होंने कहा कि मेरे ऊपर झूठा आरोप लगाने वाले मुख्यमंत्री अब दिन-रात झूठ बोलते हैं, सत्ता का दुरूपयोग कर रहे हैं, झूठी घोषणाएं करते हैं।

लखीमपुर के दर्जनों लोग कांग्रेस में शामिल

कांग्रेस पार्टी की नीतियों में आस्था व्यक्त करते हुए किसान कांग्रेस मध्य जोन के अध्यक्ष ब्रज मौर्या एवं तेज प्रताप गुप्ता के नेतृत्व में जनपद लखीमपुर के दर्जनों लोगों ने आज यहां उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय जी के समक्ष कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। प्रदेश कांग्रेस के ज्वाइनिंग प्रभारी नितिन शर्मा जी ने सदस्यता ग्रहण करने वालों को विधिवत कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता दिलायी।

ओपी राजभर पागल हो गए हैं, दवाई की जरूरत : सुरेंद्र राजपूत

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता और प्रवक्ता सुरेंद्र राजपूत ने सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के नेता और उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओम प्रकाश राजभर पर तीखी टिप्पणी की है। आरक्षण को लेकर ओम प्रकाश राजभर के दिए गए बयान पर कांग्रेस के सुरेंद्र राजपूत ने कहा आरक्षण विरोधियों की संगत में रहकर राजभर पागल हो गए हैं. उन्हें दवाई की आवश्यकता है। उन्हें संविधान में आरक्षण सामाजिक स्थिति को उत्थान के लिए दिया गया था. आपको छोड़ना हो तो छोड़िए पर बाकी क्यों छोड़ें. आप आरक्षण के विरोधी है। संघ, भाजपा विरोधी थी पर ओपी राजभर भी इसके विरोधी हो गए. अपने दिमाग का इलाज कराइये आरक्षण सामाजिक न्याय का मुद्दा है। बता दें केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले की प्रतिक्रिया के जवाब में राजभर ने कहा था कि जिन्होंने मुख्यधारा में जगह बना ली है. उन्हें इससे बाहर रखा जाए।

कॉकरोच साफ करेंगे सियासी गंदगी?

जेन-जी के आंदोलन से मोदी सरकार डरी

- » सीजेपी ने पूरे देश शुरू किया स्कूलों का दौरा
- » कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी भी आए साथ
- » मोदी सरकार में 547 करोड़ से चमके मंत्रियों के बंगल
- » सीजेपी बोली- स्कूल कब सुधरेंगे
- » भाजपा ने कॉकरोच जनता पार्टी के आरोपों को किया खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूरी मनमानी के साथ पिछले बारह साल से चल रही एनडीए व मोदी सरकार को पिछले दो महीने से डर के साये में सरकार चलानी पड़ रही है। ये डर जेन जी का है जिस जेन जी सरकार की शिक्षा प्रणाणी पर सवाल उठाते हुए जंतर मंतर पर कई दिनों तक जोरदार प्रर्दशन करते परीक्षाओं में हो रहे धांधली के खिलाफ शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रदान का इस्तीफा दिलवा दिया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व सीजेपी मतलब कॉकरोच जनता पार्टी ने किया। हालांकि बाद सियासी पार्टियों के साथ समाजिक संस्थाओ ने उसका साथ दिया।

कहीं न कहीं सरकार ने भी उसकी कई बातों को माना। पर सबकु छ होने के बाद भी सीजेपी का आक्रामक रूख अब भी जारी है। हालांकि भाजपा ने सीजेपी के दावों को खारिज कर दिया है। उसने कहा कि आप की सरकार वाले राज्य में भी जाएं। 15 अगस्त से सीजेपी ने शिक्षा मंदिरों अर्थात स्कूल का दौरा कर वहां कि बदहली पर सरकारों पर निशाना साधना शुरू किया। पार्टी के नेता केंद्र के राज्य सरकारों को भी घेर रही है। उधर सीजेपी ने आरटीआई से मिले आंकड़ों के आधार पर लुटियंस दिल्ली में केंद्रीय मंत्रियों के सरकारी बंगलों के रखरखाव पर पिछले 12 वर्षों में हुए खर्च पर सवाल उठाए हैं। पार्टी का कहना है कि इन पैसों का इस्तेमाल सरकारी स्कूलों में बिजली, पानी, शौचालय और अन्य बुनियादी सुविधाएं सुधारने में किया जा सकता था। कॉकरोच जनता पार्टी ने लुटियंस दिल्ली में केंद्रीय मंत्रियों के सरकारी बंगलों के रखरखाव पर होने वाले खर्च को लेकर सवाल उठाए हैं। पार्टी ने कहा है कि जिस रकम को मंत्रियों के आलीशान सरकारी बंगलों के रखरखाव पर खर्च किया जा रहा है, उसका इस्तेमाल सरकारी स्कूलों की बुनियादी सुविधाएं सुधारने में किया जा सकता था। सूचना के अधिकार से मिली जानकारी पर आधारित आंकड़ों के मुताबिक, पिछले 12 वर्षों में केंद्रीय मंत्रियों के आवासों के रखरखाव पर कुल 547.68 करोड़ खर्च किए गए हैं।

शानदार बंगलों पर खर्च बंद करो

कॉकरोच जनता पार्टी ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए अपनी नाराजगी जाहिर की। पार्टी ने लिखा कि अपने शानदार बंगलों को ठीक करना बंद करो और स्कूलों को ठीक करो! 92 करोड़ 10 नए विश्वस्तरीय सरकारी स्कूल। पैसा तो है, लेकिन इसे सरकारी स्कूलों पर खर्च करने की इच्छाशक्ति की कमी है। पार्टी ने इन आंकड़ों को सूचना के अधिकार के जरिए हासिल जानकारी पर आधारित बताया है। उसके मुताबिक,14 से 19 के बीच मंत्रियों के बंगलों के रखरखाव पर 133.9 करोड़ खर्च किए गए। वहीं, 19 से 24 के बीच यह खर्च बढ़कर 250 करोड़ और 24 से 26 के बीच 174.5 करोड़ रहा। 12 साल की अवधि में कुल खर्च 547.68 करोड़ बताया गया है।

गांवों के स्कूलों का दौरा करने का किया दावा

अभिजीत दीपके ने कहा कि उन्होंने हाल ही में ग्रामीण इलाकों के सरकारी स्कूलों का दौरा किया और वहां कई जगहों पर बुनियादी सुविधाओं की कमी देखी। उनके मुताबिक, कुछ स्कूलों में बच्चों के लिए पीने के पानी जैसी जरूरी सुविधा तक पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। दीपके ने सवाल उठाते हुए कहा, 'स्कूलों में पीने का पानी मिलना भी मुश्किल हो रहा है। तो हम उन बच्चों के स्कूलों के लिए इस पैसे का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहे हैं? नए स्कूल बनाने के लिए इस पैसे का इस्तेमाल क्यों नहीं किया जा रहा है?' उन्होंने स्कूलों की ओर से बताई जाने वाली धन की कमी और पीएम केयर्स निधि में मौजूद राशि के बीच अंतर का भी मुद्दा उठाया। उनका कहना था, 'तो एक तरफ तो यह कहा जा रहा है कि स्कूलों के लिए धन नहीं है, और दूसरी तरफ पीएम केयर्स निधि में 8,500 करोड़ पड़े हैं।'

8 करोड़ की लागत से 1 हजार से ज्यादा आदर्श स्कूलों का दावा

दीपके ने अनुमान लगाया कि आधुनिक और बेहतर बुनियादी सुविधाओं वाले एक आदर्श स्कूल के निर्माण पर करीब 8 करोड़ खर्च हो सकते हैं। इसी अनुमान के आधार पर उन्होंने कहा कि पीएम केयर्स निधि में मौजूद राशि से सैद्धांतिक तौर पर 1,000 से अधिक ऐसे स्कूल बनाए जा सकते हैं। अगर एक स्कूल की लागत 8 करोड़ है, तो 8,5000 करोड़ से 1, हजार से ज्यादा नए आधुनिक आदर्श स्कूल बनाए जा सकते थे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हो

रहा है। पीएम केयर्स निधि की स्थापना 27 मार्च 2020 को कोविड-19 महामारी सहित आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के उद्देश्य से की गई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसके अध्यक्ष हैं, जबकि रक्षा मंत्री, गृह मंत्री और वित्त मंत्री इसके ट्रस्टी हैं। निधि को लेकर समय-समय पर इसकी पारदर्शिता, धन के इस्तेमाल और इसके उद्देश्यों को लेकर राजनीतिक बहस होती रही है। मौजूदा विवाद में भी कॉकरोच जनता पार्टी ने स्कूलों की जरूरतों और निधि में उपलब्ध राशि के बीच तुलना करते हुए सवाल उठाए हैं।

2025-26 में 92 करोड़ हुआ खर्च

एक रिपोर्ट सामने आने के बाद उठा, जिसमें दावा किया गया कि केंद्रीय मंत्रियों के सरकारी आवासों के रखरखाव पर होने वाला सालाना खर्च 14-15 में करीब 27 करोड़ था। यह राशि 25-26 में बढ़कर रिकॉर्ड 92 करोड़ तक पहुंच गई। इन आंकड़ों को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी ने सरकार पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि जब सरकारी स्कूलों में आज भी बुनियादी सुविधाओं की कमी है, तो बड़ी रकम मंत्रियों के बंगलों के रखरखाव पर क्यों खर्च की जा रही है।

'स्कूल ठीक करो' अभियान के बीच उठा मुद्दा

मंत्रियों के सरकारी बंगलों पर खर्च को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी की यह टिप्पणी उसके ग्रामीण सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने के लिए चलाए जा रहे 'स्कूल ठीक करो' अभियान के बीच आई है। पार्टी ने 15 अगस्त को इस अभियान की शुरुआत की थी। अभियान के तहत ग्रामीण सरकारी स्कूलों का सामाजिक अंकेक्षण कराने और वहां बिजली, पीने का पानी, शौचालय तथा मध्याह्न भोजन जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार की मांग की जा रही है। पार्टी ने ग्रामीण इलाकों में पढ़ने वाले बच्चों के सामने मौजूद परिवहन की समस्या को भी अभियान का हिस्सा बनाया है।

सरकार में इच्छाशक्ति की कमी है

कॉकरोच जनता पार्टी का कहना है कि सरकारी स्कूलों को बुनियादी सुविधाओं के लिए जूझना नहीं चाहिए, खासकर तब जब सरकार के पास दूसरे क्षेत्रों में खर्च करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध है। पार्टी ने 'एक्स' पर एक अन्य पोस्ट में कहा कि धन की कमी कभी समस्या नहीं रही। समस्या तो इरादे की कमी है। पार्टी का तर्क है कि सरकारी धन के इस्तेमाल की प्राथमिकताओं पर नए सिरे से विचार करने की जरूरत है और ग्रामीण स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ जरूरी बुनियादी सुविधाएं भी मिलनी चाहिए।

पीएम केयर्स निधि को लेकर भी उठे सवाल

इससे पहले कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके ने पीएम केयर्स निधि के इस्तेमाल को लेकर भी सवाल उठाए थे। उन्होंने पूछा था कि इस निधि का इस्तेमाल ग्रामीण सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाएं बेहतर करने के लिए क्यों नहीं किया जा सकता। पीएम केयर्स निधि के नवीनतम लेखापरीक्षित विवरण के अनुसार, निधि की कुल राशि 23-24 में 7,173.03 करोड़ थी, जो 17.8 प्रतिशत बढ़कर 24-25 में 8,452.7 करोड़ हो गई।

पीएम केयर्स निधि को लेकर गलत जानकारी फैलाया जा रहा : भाजपा

कॉकरोच जनता पार्टी के आरोपों पर पलटवार करते हुए भाजपा ने पार्टी पर पीएम केयर्स निधि को लेकर गलत जानकारी फैलाने का आरोप लगाया। भाजपा की गोवा इकाई ने कहा कि पीएम केयर्स निधि आपातकालीन परिस्थितियों और आपदा राहत के लिए बनाई गई है। भाजपा ने कॉकरोच जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए इसे आम आदमी पार्टी का 'पॉलिटिकल प्रोजेक्ट' बताया। पार्टी ने 'एक्स' पर लिखा, 'पीएम केयर्स निधि आपातकाल और आपदा राहत के लिए है। अरविंद केजरीवाल, आपने अपने लोगों को अच्छी नौटंकी तो सिखाई, लेकिन बुनियादी बातें नहीं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। भाजपा ने अभिजीत दीपके को पंजाब जाकर वहां के सरकारी स्कूलों की स्थिति का जायजा लेने की चुनौती भी दी। पार्टी ने आम आदमी पार्टी की पंजाब सरकार के 'विश्वस्तरीय स्कूलों' के दावों पर भी सवाल उठाए। इस तरह एक ओर कॉकरोच जनता पार्टी सरकारी बंगलों के रखरखाव और पीएम केयर्स निधि में मौजूद राशि को सरकारी स्कूलों की जरूरतों से जोड़कर सरकार पर सवाल उठा रही है, वहीं भाजपा ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कॉकरोच जनता पार्टी और आम आदमी पार्टी पर राजनीतिक बयानबाजी करने का आरोप लगाया है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

सुर और संगीत से खत्म होगा मानसिक तनाव

"संगीत हमारी मानसिक स्पष्टता को बनाए रखता है। संगीत की सभी कलात्मक संवेदनाओं को तीन गुणों में समेटा जा सकता है। निष्कर्ष निकालें तो कह सकते हैं 'माधुर्य' मनोहारी या लालित्य, 'ओज' उत्तेजना और 'प्रसाद' सुरुचिपूर्ण होने की अभिव्यक्ति है। इन तीनों का समायोजन संगीत को सर्वाधिक संप्रेषणीय कलारूप में परिवर्तित कर देता है।

संगीत इंसान की शरीर को ही नहीं आत्मा को भी झंकृत कर देता है। आप कितना ही थके हुए हों अगर आपने सुरों में अपने को डुबो लिया तो हर थकान दूर हो जाएगी। यही नहीं यह आपके मानसिक तनाव को खत्म कर देगा। वो संगीत की चाहे कोई भी विधा हो और उसमें हिंदुस्तानी संगीत मानव समाज को एक अनूठी देन है। हालांकि फिल्मी संगीत को ज्यादा तरजीह दी जाती है पर उसमें एक ऐसा भी वर्ग है जो लाइट म्यूजिक व अच्छे शब्दों से पिरोय गए गाने से अपने को बांध लेता है। यह महज मनोरंजन का माध्यम भर नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और मनुष्यता की परिपूर्णता का द्योतक भी है। संगीत हमारी मानसिक स्पष्टता को बनाए रखता है। संगीत की सभी कलात्मक संवेदनाओं को तीन गुणों में समेटा जा सकता है। निष्कर्ष निकालें तो कह सकते हैं 'माधुर्य' मनोहारी या लालित्य, 'ओज' उत्तेजना और 'प्रसाद' सुरुचिपूर्ण होने की अभिव्यक्ति है। इन तीनों का समायोजन संगीत को सर्वाधिक संप्रेषणीय कलारूप में परिवर्तित कर देता है। सामान्यतया हम लोग कला के विभिन्न आयामों या अनुभव के लिए सौंदर्य शब्द को प्रयोग में लाते हैं।

वहीं प्रमुख भारतीय कला व्याख्याकार इसे 'कलात्मक संवेदनशीलता' या 'कलात्मक अनुभव' के रूप में परिभाषित करते हैं। वहीं तमाम पश्चिमी कला विशेषज्ञ और दार्शनिक, जिसमें जर्मनी के मैक्स-मूलर भी शामिल हैं मानते हैं कि भारतीयों के दिमाग कला में सुंदरता का कोई विचार ही नहीं है। हम सभी समझते हैं कि कला में हमेशा भावनात्मकता का तत्व मौजूद रहता है। संगीत अपने आप में एक स्वायत्त कलारूप है। तब यहां पर सवाल उठता है कि जब यह स्वायत्त है तो फिर यह किसी भावना या भावनात्मक अभिव्यक्ति को कैसे संप्रेषित कर सकता है? इसका एक उत्तर तो यह हो सकता है कि संगीत भले ही एक प्रतिनिधित्व करने वाली कला नहीं है, परंतु यह अर्थपूर्ण एवं भावनात्मक कलारूप तो है। जिस तरह भारतीय काव्य परंपरा सभी तरह की भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है उसी तरह संगीत भी हमारी प्रत्येक भावना को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य रखता है। इस संप्रेषण का मुख्य माध्यम 'रस' है और इसे तीन प्रमुख गुणों से अभिव्यक्त किया जाता है। पहला गुण है 'माधुर्य'। इसका शाब्दिक अर्थ होता है मधुरता, आकर्षण, मोहकता और सुघड़ता। इन सभी भावनात्मक गुणों में कोमलता अनिवार्यत, विद्यमान रहती है। ये सभी भावनाएं जिनमें हम महसूस करते हैं कि हमारा हृदय पिघल रहा है, द्रुतिकारणम कहलाती हैं। हमारी भावनाएं बेहद कोमल हो जाती हैं, जैसे स्त्री-पुरुष के मध्य प्रेम, ईश्वर के प्रति प्रेम। इनमें मुख्य स्वर करुणा, शांति और गहन आध्यात्मिक शांति का होता है। दूसरा गुण है 'ओज'। यह मनुष्य में विद्यमान सर्वोच्च गुणों में से है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कश्मीर मुद्दा सुलझाए बगैर ब्रिटेन का निकलना!

श्याम भाटिया

भारत और पाकिस्तान के बीच की 'जैसे को तैसा' जवाब देने की प्रवृत्ति और अविश्वास के मिलेजुले भाव से देखना दिलचस्प है। बुधवार को भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने श्रीनगर का दौरा किया और जम्मू-कश्मीर को 'भारत का अहम हिस्सा' बताया। पाकिस्तान ने तुरंत इसका विरोध किया। इसके बाद राजनयिक स्तर पर 'जैसे को तैसा' वाला दौर शुरू हुआ पाकिस्तान ने इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग के बाहर लगे सुरक्षा बैरियर हटवा दिए; तो जवाबी प्रतिक्रिया में भारत ने भी नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग के बाहर ठीक वही किया। भारत और पाकिस्तान की आजादी के बाद उनकी उम्र लगभग 80 साल हो चुकी है। लेकिन वे अभी भी ऐसे व्यवहार करते हैं मानो दिवंगत माता-पिता की विरासत के लिए झगड़ रहे बच्चे हों। जाहिर है, यहां 'दिवंगत माता-पिता' से अभिप्राय ब्रिटिश साम्राज्य से है।

इससे एक दिलचस्प सवाल उठता है- 1947 में पीछे छोड़ दिए गए 'ताज के रत्न' (भारत) को ब्रिटेन किस नजरिए से देखता है? क्या ब्रिटेन वाकई अतीत को भूलकर आगे बढ़ गया है? मुझे शक है कि इसका जवाब उससे कहीं ज्यादा जटिल है, जितना ब्रिटिश या उनकी पूर्व प्रजा स्वीकार करना चाहेगी। भारत से ब्रिटेन की वापसी असाधारण रूप से जल्दबाजी में हुई थी। फरवरी 1947 में क्लेमेंट एटली की सरकार ने घोषणा की कि ब्रिटिश शासन जून 1948 तक खत्म हो जाएगा। लॉर्ड माउंटबेटन वायसराय बनकर आए और उन्होंने इस समय-सीमा को सरका कर पहले कर दिया। अगस्त 1947 में आजादी मिली। नए देशों की सीमाओं की घोषणा सिर्फ दो दिन बाद की गई। लाखों लोगों को अचानक पता चला कि वे एक ब्रिटिश वकील, सर सिरिल रैडक्लिफ द्वारा खींची गई रेखा के गलत तरफ रह रहे हैं, जो इससे पहले कभी भारत नहीं आए थे। इसके नतीजे बहुत भयानक रहे-बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन, सांप्रदायिक नरसंहार और कड़वाहट की ऐसी विरासत, जो पीढ़ियों तक बनी रही। और फिर कश्मीर का मुद्दा था। यह महज जमीन का कोई टुकड़ा भर नहीं था, जिसे एक नया देश आसानी से दूसरे देश को सौंप दे।

जम्मू-कश्मीर एक रियासत थी, जिसके शासक महाराजा हरि सिंह ने काफी हील-हुज्जत के बाद अक्टूबर 1947 में भारत में विलय के दस्तावेज (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन) पर हस्ताक्षर किए थे। इसे गवर्नर-जनरल लॉर्ड माउंटबेटन ने स्वीकार कर लिया, जो आजादी के बाद भी भारत के गवर्नर-जनरल बने रहे। संलग्न पत्र में उन्होंने लिखा था कि जब कानून-व्यवस्था बहाल हो जाएगी, तो विलय का सवाल लोगों की राय से तय किया जाना चाहिए। वह अनसुलझा इतिहास भारत-पाकिस्तान के रिश्तों में सबसे बड़ा जख्म बन गया। तीन युद्ध हुए, सशस्त्र विद्रोह, आतंकवाद, सैन्य टकराव और न जाने कितने ही कूटनीतिक संकट आए। आज 2026 में, हम देख रहे हैं कि परमाणु हथियार संपन्न दो देश एक-दूसरे के राजनयिक मिशनों के बाहर सुरक्षा इंतजामों को लेकर जवाबी कार्रवाई कर रहे हैं, क्योंकि एक अमेरिकी राजदूत ने कश्मीर के बारे में कुछ ऐसा कहा जो पाकिस्तान को नागवार गुजरा। इन सबके लिए ब्रिटेन को दोष देना आसान होगा। लेकिन यह करना कुछ ज्यादा ही आसान होगा। भारत और पाकिस्तान के पास परिपक्व होने के लिए लगभग आठ दशक थे। उनके नेताओं ने सुलह की बजाय बार-बार राष्ट्रवाद को चुना।

दोनों देशों ने घरेलू राजनीतिक मकसदों के लिए कश्मीर का इस्तेमाल किया। दोनों ने बंटवारे और खुद को पीड़ित दिखाने के आधार पर मजबूत प्रचार कथानक गढ़े हैं। सन 1947 के बाद से दिल्ली या इस्लामाबाद में लिए गए हर फैसले के लिए ब्रिटेन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। लेकिन फिर, ब्रिटेन भी इतिहास से पूरी तरह बच नहीं सकता। नि:संदेह, उसने ऐसे राजनीतिक हालात पैदा किए जिनमें बंटवारा हुआ। इसने तय किया कि मूल समयसीमा से पहले ही यहां से चले जाना है। उसने पंजाब और बंगाल के बंटवारे की निगरानी की। सत्ता हस्तांतरण प्रक्रिया में ब्रिटिश अधिकारी गहराई तक शामिल थे। ब्रिटिश राष्ट्रीय संग्रहालय के रिकॉर्ड से स्थापित होता है कि ब्रिटिश अधिकारियों के पास यह तय करने के लिए सिर्फ नौ हफ्ते थे कि ब्रिटिश भारत का बंटवारा कैसे किया जाए।

ब्रिटिश साम्राज्य नक्शे से गायब हो गया, लेकिन उसकी सीमाएं नहीं गईं। उसके बनाए संस्थान पूरी तरह खत्म नहीं हुए। उसकी अंग्रेजी भाषा नए रसूखदार वर्ग की गर्व योग्य बोली बन गई। उसकी संसदीय प्रणाली को अपनाया गया। उसकी सेना का ढांचा, प्रशासनिक परंपराएं और कानूनी नियम बने रहे। और उसके जाने के दौरान बने जख्म भी बने रहे। तथापि, ब्रिटेन खुद काफी हद तक आगे बढ़ चुका है। आज का ब्रिटेन बिल्कुल अलग सवालों में उलझा हुआ है ब्रेक्सिट, आप्रवासन, एनएचएस, जीवन-यापन की बढ़ती लागत, सुधार, पारंपरिक राजनीतिक दलों का पतन और दुनिया में उसकी अनिश्चित स्थिति।

अनुशासन के लिए बेंत शिक्षा की आत्मा पर चोट

डॉ. पुनीत अरोड़ा

तमिलनाडु के तेनकासी जिले में कक्षा 10 की दस छात्राओं को एक शिक्षिका द्वारा कथित रूप से बेंत से पीटे जाने की घटना को केवल विद्यालय में अनुशासन की एक घटना मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह घटना हमारे शिक्षा तंत्र के सामने एक गंभीर प्रश्न खड़ा करती है क्या विद्यालय केवल पाठ्यक्रम और परीक्षाओं की तैयारी कराने वाले संस्थान हैं, या फिर वे ऐसे सुरक्षित और गरिमामय स्थान भी हैं, जहां बच्चे बिना भय के सीख सकें, अपनी बात रख सकें और अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें? शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भय पैदा करना नहीं, बल्कि आत्मविश्वास पैदा करना है। जिस हाथ में बच्चों को दिशा देने के लिए किताब और कलम होनी चाहिए, यदि उसी हाथ में बेंत आ जाए, तो चोट केवल शरीर पर नहीं लगती, बल्कि बच्चे के मन और शिक्षा व्यवस्था के प्रति उसके विश्वास पर भी पड़ती है।

बालकों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 17 में शारीरिक दंड और मानसिक उत्पीड़न पर स्पष्ट रोक लगाई गई है। इसलिए शिक्षा का अधिकार केवल विद्यालय में दाखिला लेने या कक्षा में बैठने तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है कि प्रत्येक बच्चा सुरक्षित, बाल-हितैषी, भयमुक्त और गरिमामय वातावरण में शिक्षा प्राप्त करे। यदि तेनकासी (तमिलनाडु) की घटना में लगाए गए आरोप सत्य पाए जाते हैं, तो यह केवल अनुशासन की सीमा का उल्लंघन नहीं, बल्कि छात्राओं के वैधानिक अधिकारों का गंभीर हनन होगा। अनुशासन के नाम पर किसी बच्चे के साथ शारीरिक या मानसिक हिंसा करना शिक्षा के मूल उद्देश्य को ही पराजित करता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 प्रत्येक व्यक्ति को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है तथा न्यायिक व्याख्याओं ने जीवन के अधिकार को मानवीय गरिमा से जोड़ा है। अनुच्छेद 14 समानता और कानून के समक्ष समान संरक्षण की गारंटी देता है। बच्चे भी इन संवैधानिक संरक्षणों के अधिकारी हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार अभिसमय यानी यूएनसीआरसी को स्वीकार किया है, जिसके तहत बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक हिंसा, दुर्व्यवहार, उपेक्षा और शोषण से संरक्षण मिलना चाहिए।

इसी भावना के अनुरूप भारतीय कानूनों में भी बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है। जहां किसी बच्चे को पढ़ाई के नाम पर भय, अपमान या शारीरिक हिंसा का सामना करना पड़े, वहां शिक्षा का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। बच्चे की गरिमा शिक्षा व्यवस्था की पहली शर्त होनी चाहिए। बच्चे के पालन-पोषण और व्यक्तित्व निर्माण की जिम्मेदारी केवल माता-पिता की नहीं होती। बच्चा अपने दिन का महत्वपूर्ण हिस्सा विद्यालय में बिताता है। इसलिए शिक्षक और विद्यालय प्रबंधन उसके मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनुशासन का अर्थ भय पैदा करना नहीं, बल्कि बच्चे को अपनी गलती समझने, उसे सुधारने और बेहतर व्यवहार के लिए प्रेरित करना है।

संवाद, सहानुभूति, मार्गदर्शन और सकारात्मक प्रोत्साहन से बच्चों में आत्म-अनुशासन विकसित किया जा सकता है। बेंत, धमकी, अपमान और डर से पैदा हुआ अनुशासन वास्तविक अनुशासन नहीं, बल्कि दबाव है। तमिलनाडु ने शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। 'इल्लम थेडी कल्वी' जैसी पहल शिक्षा को बच्चों के करीब ले जाने का प्रयास है। 'नान मुदलवन' युवाओं में कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने पर केंद्रित है, जबकि 'पुधुमई पेन' जैसी योजना बालिकाओं को उच्च शिक्षा की ओर प्रोत्साहित करती है। लेकिन इन योजनाओं की सफलता केवल नामांकन, परीक्षा परिणाम या उच्च शिक्षा में प्रवेश के आंकड़ों से नहीं मापी जा सकती। यह भी देखना होगा कि जिस विद्यालय में बच्चा पहुंचता है, वहां उसे सम्मान, सुरक्षा और आत्मविश्वास मिलता है या नहीं। एक ओर सरकार बालिकाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करे और दूसरी ओर विद्यालय परिसर में उन्हें अपमान या हिंसा का सामना करना पड़े, तो नीति और व्यवहार के बीच गंभीर विरोधाभास पैदा होता है। ऐसी घटनाओं के बाद केवल संबंधित शिक्षक के विरुद्ध कार्रवाई कर देना पर्याप्त नहीं है। प्रत्येक ऐसी घटना शिक्षा व्यवस्था में मौजूद कमियों की ओर संकेत करती है। विद्यालयों में अनुशासन संबंधी नीतियों, बाल संरक्षण व्यवस्था और शिकायत निवारण तंत्र की व्यापक समीक्षा आवश्यक है।

प्रभावित छात्राओं को आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक परामर्श और भावनात्मक सहयोग दिया जाना चाहिए। विद्यालय में पूर्व में प्राप्त शिकायतों और की गई अनुशासनात्मक कार्रवाइयों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। शिक्षकों को बाल अधिकारों, सकारात्मक अनुशासन और अहिंसक व्यवहार के संबंध में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। शिक्षा विभाग को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक विद्यालय में बच्चों के लिए ऐसा शिकायत तंत्र उपलब्ध हो, जहां वे बिना भय के अपनी बात रख सकें। जिस बच्चे को शिक्षक से डर लगता है, उसके लिए शिकायत तंत्र का होना ही पर्याप्त नहीं; उस तंत्र पर उसका विश्वास होना भी जरूरी है। मानवाधिकार की दृष्टि से किसी नाबालिग बच्चे की शारीरिक सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, गरिमा और शिक्षा ये सभी एक-दूसरे से जुड़े अधिकार हैं। कथित रूप से बेंत से पीटा जाना केवल शरीर पर चोट का मामला नहीं है। इससे बच्चे के भीतर भय, अपमान, आत्मविश्वास में कमी और विद्यालय से दूरी जैसी दीर्घकालिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

आफिस में घंटों बैठे रहना बना सकता है दिल को बीमार

आज के समय में ऑफिस का काम हो या घर से वर्क फ्रॉम होम, ज्यादातर लोगों का काफी समय कुर्सी पर बैठकर ही गुजरता है। कंप्यूटर या लैपटॉप के सामने लगातार कई घंटे बैठे रहना अब सामान्य दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि लंबे समय तक एक ही जगह बैठे रहना आपके दिल की सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकता है? ऐसे में खासकर ऐसे लोगों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है, जो रोजाना 8 से 10 घंटे या उससे ज्यादा समय तक डेस्क पर बैठकर काम करते हैं। आइए जानते हैं लंबे समय तक बैठने से दिल पर क्या असर पड़ सकता है और इससे बचने के आसान तरीके क्या हैं।

लंबे समय तक बैठे रहने से दिल पर क्या असर पड़ता है?

लगातार कई घंटे बैठे रहने से शरीर की शारीरिक गतिविधि काफी कम हो जाती है। इसका असर धीरे-धीरे पूरे शरीर पर पड़ सकता है। लंबे समय तक निष्क्रिय रहने से वजन बढ़ने, ब्लड प्रेशर बढ़ने और ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में परेशानी जैसी समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है। ये सभी स्थितियां आगे चलकर दिल की सेहत को प्रभावित कर सकती हैं।

बढ़ सकता है हार्ट डिजीज का खतरा

जो लोग लंबे समय तक बैठे रहते हैं और शारीरिक गतिविधि बहुत कम करते हैं, उनमें हृदय रोग का खतरा बढ़ सकता है। लगातार बैठे रहने की आदत शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल, ब्लड प्रेशर और वजन जैसे हार्ट रिस्क फैक्टर्स को प्रभावित कर सकती है।

ब्लड सर्कुलेशन पर पड़ सकता है असर

एक ही जगह लंबे समय तक बैठे रहने से पैरों और शरीर के निचले हिस्से में ब्लड फ्लो कम हो सकता है। लंबे समय तक निष्क्रिय रहने के कारण पैरों में भारीपन, अकड़न या सूजन जैसी परेशानी भी महसूस हो सकती है।

ऑफिस में काम करने वाले लोग कैसे बचें?

अगर आपका काम घंटों बैठकर करने वाला है, तो कुछ छोटी-छोटी आदतों को अपनाकर शरीर को एक्टिव रखा जा सकता है।

- हर 30 से 60 मिनट में कुछ देर के लिए कुर्सी से उठें।
- ऑफिस में संभव हो तो थोड़ी देर पैदल चलें।
- फोन पर बात करते समय खड़े होने या चलने की कोशिश करें।
- लंच के बाद कुछ मिनट वॉक करें।
- लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।
- रोजाना वॉक, योग या एक्सरसाइज के लिए समय निकालें।
- काम के बीच पैरों और शरीर को स्ट्रेच करते रहें।

वजन बढ़ने का खतरा

लंबे समय तक बैठकर काम करने से शरीर कम कैलोरी खर्च करता है। अगर खान-पान भी सही नहीं है, तो वजन बढ़ सकता है। अधिक वजन और मोटापा दिल की बीमारियों के प्रमुख जोखिम कारकों में शामिल हैं।

ब्लड प्रेशर और शुगर पर असर

शारीरिक गतिविधि की कमी से ब्लड प्रेशर और ब्लड शुगर को नियंत्रित रखना मुश्किल हो सकता है। लंबे समय तक बैठे रहने के साथ अगर रोजाना एक्सरसाइज भी न की जाए तो मेटाबॉलिक समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।

रोज एक्सरसाइज करने से नुकसान खत्म हो जाएगा?

रोजाना एक्सरसाइज करना दिल और शरीर के लिए फायदेमंद है, लेकिन पूरे दिन लगातार बैठे रहने की आदत को पूरी तरह नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति सुबह या शाम एक्सरसाइज करता है, लेकिन बाकी दिन लगातार कुर्सी पर बैठा रहता है, तो उसे दिनभर में छोटे-छोटे एक्टिविटी ब्रेक लेने चाहिए।

हंसना मना है

एक कंजूस मां का बेटा अपनी गर्लफ्रेंड के साथ डेट पर गया, मां (गुस्से में): गधे डेट पर कितने रुपए खर्च किए तुने? बेटा: 500 रुपए, मां- 500 रुपए खर्च करते हुए तुझे शर्म नहीं आई, बेटा: वो इतने ही लेकर आई थी.....

मां: बेटा तुझे कैसी बहू चाहिए? बेटा: बिलकुल आपके जैसी, लाड़ और प्यार करने वाली, मां: क्या बात है बेटा, लगता है तू भी, अपने पापा की तरह पूरी जिंदगी चप्पल, खाकर ही बिताएगा.....

राजू (सुरेश से): यार तेरी लाइफ में कोई लड़की क्यूं नहीं आती? सुरेश (शायराना अंदाज में): जिंदगी हमारी यूं सितम हो गई, खुशी ना जानें कहां दफन हो गई, बहुत लिखी खुदा ने लोगों की तकदीर में मोहब्बत, जब हमारी बारी आई तो स्याही खत्म हो गई......

तूफानी बारिश में आधी रात को एक आदमी पिज्जा लेने गया, पिज्जावाला: आप शादीशुदा हो? आदमी (गुस्से में): ऐसे तूफान में कौन मां अपने बेटे को पिज्जा लेने भेजेगी?

कहानी — बुलबुल और अमरूद

बच्चो! जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वह सदियों पहले की बात है। एक बार एक बुलबुल को अत्यधिक भूख लगी । वह भोजन तलाश करते-करते एक अमरूद के पौधे पर जा बैठी और अपनी चोंच से अमरूद कुतरने लगी। ऐसा करते हुए उसने उतने अमरूद खाए नहीं थे जितने कि चोंच मारकर-मारकर जमीन पर फेंक दिए थे। अमरूद के पौधे से इस तरह की बर्बादी सहन नहीं हुई। उसने बुलबुल से कहा, ओ! बुलबुल! तुझ में और तोते में भला अब क्या फर्क रह गया है? वह भी खाता कम है और नष्ट ज्यादा करता है, तुम भी वैसा ही कर रही हो। उसकी यह बात सुनकर बुलबुल चिढ़ गई और बोली, तुम कितने मूर्ख हो? मेरी तुलना तोते से कर रहे हो? कहाँ मैं, कहाँ वो। अमरूद के पौधे ने पूछा, वह कैसे? मैं अगर पेट भरने के लिए फल खाती हूँ, तो साथ-साथ तुम्हें मीठे गीत भी तो सुनाती हूँ। है ना? बुलबुल ने कहा। अमरूद का पौधा कुछ देर सोचने के पश्चात बोला, बात तो तुम्हारी सही है, लेकिन यदि तुम केवल पके हुए फल ही खाओ तो तुम्हें भी खाने में आसानी रहेगी और मुझे भी पीड़ा कम होगी क्योंकि पके हुए फलों को तो एक दिन झड़ना ही होता है। बुलबुल को उसकी बात जंच गई और वह खुशी-खुशी मान गई। उसके बाद वह पके हुए फल ही खाने लगी। जब उसका पेट भर जाता, तो वह एक भी फल को व्यर्थ चोंच न मारती। एक दिन सुबह-सुबह शीतल हवा में झूमते हुए अमरूद के पौधे ने पास खड़े अनार के पौधे को यह सारी बात बताई। अभी दोनों पौधे बातें कर ही रहे थे कि इतनी देर में एक लड़का वहाँ आया और छड़ी की सहायता से अमरूद के पौधे पर वार करके अमरूद झाड़ने लगा। उसने कच्चे, अधपके और पक्के सभी तरह के कितने ही अमरूद झाड़ कर जमीन पर गिरा दिए। फिर उनमें से जो पक्के और अच्छे लगे वह चुन लिए बाकी वहीं जमीन पर गिरे रहने दिए , और चला गया। उसके जाने के बाद अनार का पौधा बड़े दुखी मन से बोला, मित्र अमरूद! बात तो तुम्हारी ठीक है, पर जो बात बुलबुल को समझ आ गई वह बात इन मनुष्यों को कब समझ आएगी। अनार के पौधे की बात सुनकर आसपास खड़े दूसरे पौधे और उन पर बैठे पक्षी सोच में पड़ गए।

10 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — कार्यक्षेत्र में आपका फोकस बेहतरीन रहेगा। नए अनुबंधों पर हस्ताक्षर करने से पहले शर्तों को ध्यान से पढ़ें। लव पार्टनर के साथ गंभीर मुद्दों पर सहमति बनेगी।

वृषभ — नौकरी में शिक्षा, कंसल्टेंसी और मीडिया से जुड़े लोगों को लाभ। विदेशी व्यापार से जुड़े लोगों को शानदार परिणाम मिलेंगे। विस्तार की योजना बनेगी।

मिथुन — डिजिटल और आईटी सेक्टर वालों के लिए बड़ा अवसर मिल सकता है। संचार तकनीकों से व्यापार में प्रगति होगी। पुरानी गलतफहमियों का अंत होगा और आपसी प्रेम बढ़ेगा।

कर्क — सहकर्मियों के साथ तालमेल बिठाकर काम करने से बड़ा लाभ होगा। व्यापारिक वादों को समय पर पूरा करें। प्रेम जीवन में मिठास बनी रहेगी। धन की आवक अच्छी रहेगी।

सिंह — वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से प्रसन्न होंगे। व्यापार में पुराने ग्राहकों से फिर से अच्छा ऑर्डर मिल सकता है। पार्टनर के साथ भविष्य को लेकर सार्थक बातचीत होगी।

कन्या — एकाग्रता से काम करने पर सफलता आपके कदम चूमेगी। पुराने सौदों से आर्थिक लाभ होगा। आपसी विश्वास और भावनात्मक संबंध गहरे होंगे।

तुला — नौकरी में आत्मबल मजबूत रहेगा। व्यापारिक विस्तार की योजनाएं मूर्त रूप ले सकती हैं। व्यस्तता के बीच साथी के लिए समय न निकालने पर हल्की नाराजगी हो सकती है।

वृश्चिक — आपकी क्रिएटिविटी रंग लाएगी। किसी बड़े व महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी मिलेगी। कारोबार है तो नए ग्राहक और नए अवसर मिलने के स्पष्ट संकेत हैं।

धनु — कार्यस्थल पर आपकी बारीकी और व्यवस्थित कार्यशैली की तारीफ होगी। नया व्यापारिक सौदा पक्का हो सकता है। पार्टनर की भावनाओं को प्राथमिकता दें।

मकर — आपकी व्यावहारिक सोच और अनुशासन कार्यक्षेत्र में सफलता दिलाएगा। व्यापार में नई रणनीति कारगर साबित होगी। दांपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

कुम्भ — नौकरी में आपके कार्य की प्रशंसा होगी। आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से आप कारोबार में आगे रहेंगे। साथी के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण रहेगा।

मीन — जिम्मेदारियां बढ़ेंगी लेकिन वरिष्ठों का मार्गदर्शन काम आएगा। व्यापार में उधारी देने से बचें। जीवनसाथी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करेंगे।

पर्दा बहुत बड़ा है, लेकिन कहानी कहीं पीछे छूट गई

मुंबई। किसी फिल्म से उम्मीद होना अच्छी बात है। लेकिन उम्मीद जब आसमान छूने लगे तो फिल्म के लिए वही उम्मीद सबसे बड़ा खतरा भी बन जाती है। यश की 'टॉक्सिक-ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' के साथ कुछ ऐसा ही हुआ है।

KGF के बाद यश की वापसी कोई सामान्य वापसी नहीं थी। चार साल से दर्शक इंतजार कर रहे थे। यश अब सिर्फ कन्नड़ सिनेमा के स्टार नहीं रहे। के जीएफ ने उन्हें देश के उन चुनिंदा अभिनेताओं में खड़ा कर दिया जिनके नाम पर सुबह छह बजे भी सिनेमाघर भर सकते हैं। इसलिए जब टॉक्सिक आई तो दर्शक सिर्फ नई फिल्म देखने नहीं गए। वे यह देखने गए कि राकी व यश अब क्या नया लेकर आए हैं। चार साल का इंतजार। के बाद यश की वापसी.. नाम 'टॉक्सिक'। ट्रेलर में बंदूकें, ग्लैमर, सर्कस, खून-खराबा और रॉकिंग स्टार यश। लगा था इस बार थिएटर में कुछ बड़ा होने वाला है।फिर फिल्म देखी...अब लगता है कि चार साल इंतजार करवाना भी शायद फिल्म का हिस्सा था। तीन घंटे से ज्यादा की इस फिल्म से बाहर निकलते हुए पहला सवाल यही आता है- आखिर कहना क्या चाहते थे? फिल्म खूबसूरत दिखती है, बड़े सेट हैं...विजुअल्स हैं, VFX है, एक्शन है। बस एक छोटी-सी चीज गायब है- वह चीज जिसके लिए ज्यादातर लोग फिल्म देखने जाते हैं - कहानी।

यहीं से टॉक्सिक की असली परीक्षा शुरू होती है

फिल्म देखकर पहली बात जो महसूस होती है, वह यह कि पैसा पर्दे पर दिखाई देता है। फिल्म बहुत बड़ी दिखती है। कैमरा शानदार है। सेट भव्य हैं। हर फ्रेम को स्टाइलिश बनाने की कोशिश की गई है। यश जब पर्दे पर आते हैं तो नजर उन पर टिकती है। उनका चलना, रुकना, सिगरेट पकड़ना, किसी को देखना, लड़ना-हर चीज को 'मोमेंट' बनाने की कोशिश हुई है। लेकिन लगभग तीन घंटे बाद जब आप सिनेमाघर से बाहर निकलते हैं तो एक सवाल पीछा करता है-कहानी कहाँ थी? यही टॉक्सिक की सबसे बड़ी कमजोरी है। यश हैं, स्टाइल है, पैसा है, लेकिन दिल कहाँ है?।

टॉक्सिक की समीक्षा

चार साल इंतजार करवाकर यश ने दिया टॉर्चर

यश, नयनतारा, रुक्मिणी वसंत, अक्षय ओबेरॉय, नयनतारा, कियारा आडवाणी, हुमा कुरैशी और तारा सुतारिया

लेखक- गीतू मोहनदास, राघव विनय शिवगंगे और यश
निर्देशक- गीतू मोहनदास

निर्माता- वेंकट के. नारायण और यश
रिलीज डेट- 26 अगस्त 2026
रेटिंग- 2/5

एक बड़ी फिल्म केवल बड़ी दिखाई देने से बड़ी नहीं बनती.

केजीएफ क्यों चली थी? क्या सिर्फ इसलिए कि उसमें यश थे? नहीं। उसमें एक बेटा था। उसकी मां थी, गरीबी थी, एक वादा था। फिर उस लड़के की असंभव-सी यात्रा थी, दर्शक राकी की बंदूक से पहले उसकी भूख को समझ चुका था। टॉक्सिक में आपको बार-बार प्रभावित करने की कोशिश होती है, लेकिन बहुत कम बार आप किसी किरदार के लिए कुछ महसूस करते हैं।

कहानी गोवा, गैंगस्टर और रिश्तों का उलझा खेल

कहानी 1940 से 1970 के दशक के गोवा में सेट है। अपराध, स्मगलिंग और सत्ता की दुनिया के बीच राया (यश) अपना साम्राज्य खड़ा करता है। कहानी उसके माता- पिता और बहन गंगा (नयनतारा) के साथ उसके रिश्ते को भी दिखाती है। राया की जिंदगी में नादिया (कियारा आडवाणी) आती है। वहीं एलिजाबेथ (हुमा कुरैशी), टोनी (अक्षय ओबेरॉय), रेबेका (तारा सुतारिया) और मेलिसा (रुक्मिणी वसंत) जैसे किरदार उसकी दुनिया का हिस्सा बनते हैं। कागज पर पिता-पुत्र, भाई-बहन, प्यार, धोखा, अपराध और सत्ता- मसाला पूरा है। लेकिन पर्दे पर आते-आते गोलियां, ग्लैमर, आपत्तिजनक दृश्य और एक्शन इतना बढ़ जाता है कि कहानी को अपनी जगह ही नहीं मिलती।

एक्टिंग : यश हैं, किरदार पीछे छूट गया

यश राया और उसके बेटे रूमी, दोनों का डबल रोल निभाते हैं। उनका स्वैग है, चाल है, लुक है, एक्शन है। फैंस को सीटी बजाने के लिए पूरा सामान दिया गया है। लेकिन उनके किरदार बिल्कुल समझ नहीं आते...यश कभी गुस्से में हैं, कभी आशिक हैं, कभी भाई हैं, कभी बाप हैं और फिर अगले ही सीन में किसी की धुनाई कर रहे हैं। इमोशंस आने ही वाली होती है कि कैमरा घूमता है और साहब फिर से स्टाइल में खड़े हैं। नयनतारा जैसी अभिनेत्री से उम्मीद थी कि वह कहानी को भावनात्मक वजन देंगी, लेकिन उनका किरदार देखकर लगता है कि इतनी बड़ी अभिनेत्री को भी फिल्म ने कह दिया.... आप बस भाई को संभालिए, भारी-भरकम डायलॉग बोलिए... बाकी हम देखते हैं। कियारा आडवाणी की बात करें तो कैमरे ने उन्हें बहुत प्यार दिया है। इतना प्यार कि कई बार लगता है कि नादिया किरदार नहीं, फिल्म की ग्लैमर एम्बेसडर हैं।
सर्कस, ग्लैमरस कपड़े, मर्मेड एक्ट, एरियल एक्ट, खूबसूरत शॉट्स-सबकुछ है। बस किरदार को हल्का और विस्तार से लिख दिया जाता तो शायद ऑडियंस और भी खुश होतीं। हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया, अक्षय ओबेरॉय, संजीदा शेख और रुक्मिणी वसंत जैसे कलाकारों को देखकर लगता है कि कास्टिंग डायरेक्टर ने बहुत मेहनत की थी। फिर स्क्रीनप्ले ने आकर सबकी मेहनत से कहा- थैंक यू, अब आप पीछे बैठिए।

धैर्य की परीक्षा

रवि बसरूर के म्यूजिक इतना तेज है कि कई जगह लगता है फिल्म आपसे बात नहीं कर रही, आप पर चिल्ला रही है। अब फिल्म की तारीफ कर देते हैं, क्योंकि आखिर कुछ तो है। राजीव रवि की सिनेमैटोग्राफी शानदार है। फिल्म देखने में महंगी लगती है और कई फ्रेम सच में कमाल के हैं। सर्कस का सेटअप, गोवा की दुनिया, एक्शन और यश के क्लोजअप अच्छे लगते हैं।

निर्देशन : आंखों को दावत दिमाग को सजा

गीतू मोहनदास ने फिल्म को छोटा सोचकर नहीं बनाया। सर्कस, गोवा, बड़े सेट, एक्शन और विजुअल्स.. हर चीज को बड़े स्तर पर दिखाने की कोशिश की गई है। लेकिन निर्देशन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी सिर्फ फिल्म को भव्य दिखाना नहीं...कहानी को दर्शक तक पहुंचाना भी होती है। और यहीं फिल्म सबसे ज्यादा कमजोर पड़ती है। फिल्म में इतने स्टाइलिश शॉट हैं कि कई बार लगता है आप फिल्म नहीं, किसी महंगे फैशन शूट का एक्सटेंडेड वर्जन देख रहे हैं।

राइटिंग और स्क्रीनप्ले फिल्म के असली दुश्मन

फिल्म की असली दुश्मन कोई विलेन नहीं, इसकी राइटिंग है। पिता-पुत्र का रिश्ता है...भाई-बहन का इमोशनल एंगल है। प्यार है..धोखा है..अपराध है..सत्ता है। इतना सामान है कि एक अच्छी फिल्म आराम से बन सकती थी।एक सीन खत्म होता है तो अगला सीन शुरू। अगला खत्म होता है तो तीसरा। किरदार क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है, उसके पीछे भावना क्या है- इन सबके बारे में सोचने का मौका फिल्म देती ही नहीं।तीन घंटे से ज्यादा की फिल्म में समय बहुत है...लेकिन स्क्रीनप्ले के पास उसे इस्तेमाल करने का तरीका नहीं है। हिंसा- मानो जैसे हीरो को गोली मारने से पहले अनुमति लेनी पड़ रही..रणबीर कपूर की एनिमल में हिंसा पर खूब बहस हुई, लेकिन वहां वह किरदार की मानसिकता से जुड़ी थी। इस फिल्म में कई जगह हिंसा बस तमाशा लगती है। यश को मारने सात-आठ लोग आते हैं और सबकी निशानेबाजी ऐसी कि लगता है हीरो को गोली मारने से पहले अनुमति लेनी पड़ रही है। भाई, कभी तो गोली सही जगह चला दो।

पब्लिक बोली- तीन घंटे की फिल्म सजा या मजा

सुबह 3 बजे सिनेमाघर पहुंचे दर्शक, डीजे के साथ 'टॉक्सिक' की रिलीज का मनाया जश्न; क्या फिल्म देखकर हुए निराश? लेकिन चार साल से यह सोचकर बैठे थे कि यश इस बार कोई दमदार, याद रहने वाली फिल्म लेकर आएंगे, तो निराशा होगी...बहुत निराशा। तकनीकी तौर पर फिल्म मजबूत है, लेकिन बिखरी राइटिंग, कमजोर डायलॉग, खराब एडिटिंग और उलझा स्क्रीनप्ले सब पर भारी पड़ जाता है। यश की स्क्रीन प्रेजेंस और कुछ अच्छे सीन ही गिनी-चुनी अच्छी बातें हैं। यश ने मेहनत पूरी की है, लेकिन फिल्म उनकी मेहनत के साथ न्याय नहीं कर पाती। तीन घंटे से ज्यादा तक बैठकर इसे झेलने के बाद कहानी याद रहे न रहे, टॉर्चर जरूर याद रहता है।

दुनिया की सबसे खास बिल्ली, जिसके पंजों में हैं 29 उंगलियां, गिनीज बुक में भी दर्ज है नाम!

आमतौर पर बिल्ली के चार पंजे, मुलायम बाल और नन्हे-नन्हे कदम ही लोगों का ध्यान खींचते हैं। लेकिन अमेरिका के विस्कॉन्सिन में रहने वाली एक बिल्ली इन सबसे बिल्कुल अलग है। इसके पंजों में इतनी ज्यादा उंगलियां हैं कि गिनते-गिनते आप भी हैरान रह जाएंगे। एरेबस अनोमली नाम की इस मेन कून बिल्ली के कुल 29 उंगलियां हैं और इसी अनोखी खूबी की वजह से इसका नाम अब गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया है। दिलचस्प बात यह है कि एरेबस की कहानी सिर्फ उसके रिकॉर्ड तक सीमित नहीं है। जन्म के कुछ समय बाद ही उसे गंभीर निमोनिया हो गया था। हालत इतनी खराब थी कि उसे ऑक्सीजन सपोर्ट तक देना पड़ा। उस वक्त उसके मालिक केंड्रा और हंटर को भी नहीं पता था कि उनकी नन्ही बिल्ली बच पाएगी या नहीं। लेकिन एरेबस ने बीमारी को मात दी और ठीक होने के बाद उसकी जिंदगी में एक ऐसा राज सामने आया, जिसने उसे पूरी दुनिया में मशहूर कर दिया। एरेबस के पूरी तरह ठीक होने के बाद उसकी सेहत की जांच के लिए एक्स-रे कराया गया। इसी दौरान उसके पंजों की बनावट ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। एक्स-रे में पता चला कि एरेबस के एक पंजे में 8 उंगलियां हैं, जबकि बाकी तीन पंजों में 7-7 उंगलियां मौजूद हैं। इस तरह चारों पंजों को मिलाकर उसकी कुल उंगलियों की संख्या 29 हो गई। यानी जहां आम बिल्लियों के पंजों की बनावट काफी सामान्य होती है, वहीं एरेबस के पंजे उसे बाकी बिल्लियों से अलग बनाते हैं। एरेबस से पहले सबसे ज्यादा उंगलियों वाली बिल्ली का रिकॉर्ड 28 उंगलियों का था। लेकिन 29 उंगलियों के साथ एरेबस ने यह रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। 13 मई को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने आधिकारिक तौर पर एरेबस अनोमली को दुनिया में सबसे ज्यादा उंगलियों वाली बिल्ली का खिताब दिया। इस तरह उसने करीब 24 साल पुराने रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए अपनी अलग पहचान बना ली। रिकॉर्ड बनने के बाद से ही एरेबस की कहानी सोशल मीडिया पर लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। लोग उसके पंजों की तस्वीरें और उसके बारे में जानकारियां देखकर हैरान हैं। एरेबस के मामले में इसकी वजह पोलिडैक्टिली नाम की जेनेटिक कंडीशन बताई गई है। आसान भाषा में कहें तो इस स्थिति में किसी जानवर के पंजों में सामान्य से ज्यादा उंगलियां विकसित हो सकती हैं। दिलचस्प बात यह भी है कि एरेबस के पिता के पास भी 24 उंगलियां थीं. ऐसे में माना जा रहा है कि अतिरिक्त उंगलियों से जुड़ा यह आनुवंशिक गुण उसे अपने पिता से मिला. हालांकि, एरेबस की 29 उंगलियां सिर्फ उसके रिकॉर्ड की वजह नहीं हैं।

अजब-गजब | यह कहलाता है दुनिया का अनोखा एडिबल शहर

यहां हर जगह मिलता है मुफ्त में खाना

सोचिए, आप किसी पार्क में टहलने निकले हों और वहां फूलों की जगह टमाटर, स्ट्रॉबेरी, आलू और दूसरी सब्जियां उगती दिखाई दें। इतना ही नहीं, आप अपनी जरूरत के हिसाब से इन्हें तोड़कर घर भी ले जा सकें और इसके लिए कोई पैसे न देने पड़ें। सुनने में थोड़ा अजीब लगता है, लेकिन जर्मनी के एंडेरनाच शहर में यह सालों से एक अनोखी पहल के तौर पर देखने को मिल रहा है। राइन नदी के किनारे बसा एंडेरनाच अपने इस अनोखे मॉडल के लिए जाना जाता है। यहां शहर की म्युनिसिपालिटी ने कई सार्वजनिक जगहों, पार्कों और हरियाली वाले इलाकों में सिर्फ सजावटी फूल-पौधे लगाने के बजाय खाने योग्य फल और सब्जियां उगाने की शुरुआत की। इन जगहों पर कई बार 'Pflücken erlaubt' लिखा बोर्ड दिखाई देता है। जर्मन भाषा के इस वाक्य का मतलब है- 'तोड़ने की अनुमति है।' यानी लोग वहां उगी चीजों को अपनी जरूरत के हिसाब से तोड़ सकते हैं।

इस पहल की शुरुआत साल 2010 में हुई थी। बताया जाता है कि शुरुआत में यहां टमाटर की 101 अलग-अलग किस्में उगाई गई थीं। इसका उद्देश्य केवल लोगों को ताजी सब्जियां उपलब्ध कराना नहीं था, बल्कि उन्हें खेती,

स्थानीय खाद्य उत्पादन और जैव विविधता के बारे में जागरूक करना भी था। धीरे-धीरे इस प्रोजेक्ट का दायरा बढ़ता गया और इसमें आलू, प्याज, गोभी, बीन्स, स्ट्रॉबेरी और कई तरह की जड़ी-बूटियां भी शामिल हो गईं। इस मॉडल की सबसे खास बात यह है कि यहां लोगों को अपनी जरूरत के हिसाब से चीजें लेने की आजादी दी गई है। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, लोग आम तौर पर उतना ही तोड़ते हैं जितनी उन्हें जरूरत होती है। इस पहल ने शहर की सार्वजनिक जगहों को सिर्फ देखने की चीज बनाने के बजाय उन्हें लोगों से जोड़ने का काम भी किया है।

इस पहल का असर सिर्फ फल और सब्जियों तक सीमित नहीं रहा। शहर के इन इलाकों की देखभाल और रखरखाव से जुड़े कामों में स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिले। साथ ही, सार्वजनिक जगहों की देखभाल और निगरानी को लेकर नगर प्रशासन पर पड़ने वाला कुछ खर्च भी कम हुआ। यानी एक छोटे से विचार ने शहर की हरियाली, लोगों की भागीदारी और स्थानीय रोजगार-व्यवस्था को एक साथ जोड़ दिया।

एंडेरनाच का यह प्रयोग अब सिर्फ जर्मनी तक सीमित नहीं माना जाता। अमेरिका और यूरोप के कुछ अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के 'एडिबल सिटी' या सार्वजनिक जगहों पर खाने योग्य पौधे उगाने वाले मॉडल में रुचि दिखाई गई है। हाल ही में इस पहल से जुड़ी जानकारी इंस्टाग्राम पर @grantonsoil नाम के अकाउंट से भी शेयर की गई, जिसे हजारों लोग पसंद कर चुके हैं। सोशल मीडिया पर लोग इस मॉडल की जमकर चर्चा कर रहे हैं और इसे शहरों में हरियाली बढ़ाने का दिलचस्प तरीका बता रहे हैं। यही वजह है कि एंडेरनाच की पहचान सिर्फ एक खूबसूरत जर्मन शहर के तौर पर नहीं, बल्कि ऐसे शहर के रूप में भी होती है जहां सार्वजनिक हरियाली लोगों की जरूरत से सीधे जुड़ी हुई है।

बिहार में छात्रों पर लाठीचार्ज पर विपक्ष का सवाल

लाठियों से सवाल नहीं दबेंगे, छात्रों को न्याय दो : राहुल गांधी

» कांग्रेस व राजद ने सम्राट सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने एकबार फिर भाजपा सरकार को आड़े हाथों लिया है। उन्होंने बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर विरोध कर रहे छात्रों का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि लाठियों से सवालों को दबाया नहीं जा सकता और राज्य सरकार से जवाबदेही की मांग की। मंगलवार को पटना में तनाव बढ़ गया, जब पुलिस ने 70वीं बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर राजभवन और मुख्यमंत्री आवास की ओर मार्च कर रहे छात्रों को तितर-बितर करने के लिए वॉटर कैनन का इस्तेमाल किया। एक पोस्ट में गांधी ने कहा कि बिहार में छात्र सीधा सवाल पूछ रहे हैं, भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी क्यों होती है?

पेपर लीक के आरोपों पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं होती और कब तक युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जाता रहेगा? गांधी ने कहा कि परीक्षाओं को लेकर विवाद कोई नई बात नहीं है, छात्र लंबे समय से भर्ती प्रक्रिया, परीक्षा पैटर्न, देरी और पारदर्शिता की कमी को लेकर चिंता जताते रहे हैं। गांधी ने कहा कि यह सिर्फ़ पुलिस की कार्रवाई का सवाल नहीं है, यह भाजपा सरकार की सोच का सवाल है। जवाब न होने पर, सरकार अपनी जवाबदेही से बचने के लिए पुलिस का इस्तेमाल एक हथियार के तौर पर कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार को यह समझना चाहिए, लाठियों से सवालों को दबाया नहीं जा सकता। डरा-धमकाकर किसी का भविष्य छीना नहीं जा सकता। बिहार के छात्र सवाल पूछते रहेंगे। और अब, वे सिर्फ़ जवाब नहीं, बल्कि जवाबदेही की मांग कर रहे हैं।

जवाब देने के बजाय सरकार वॉटर कैनन का इस्तेमाल कर रही

उन्होंने कहा कि जवाब देने के बजाय सरकार क्या कर रही है? वह लाठी और वॉटर कैनन का इस्तेमाल कर रही है। वह छात्रों को हिरासत में ले रही है। सिवान में तो प्रदर्शनकारियों पर एके -47 से फायरिंग की खबरें भी आईं। कांग्रेस नेता ने आगे आरोप लगाया कि यह मामला सिर्फ़ पुलिस की कार्रवाई का नहीं है, बल्कि छात्रों की चिंताओं के प्रति भारतीय जनता पार्टी सरकार के रवैये का भी है।

युवाओं के भविष्य को कुचला जा रहा : तेजस्वी

पटना। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने पटना के पीएमसीएच पहुंचकर प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली के विरोध प्रदर्शन के दौरान घायल हुए छात्रों का हालचाल जाना। उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि युवाओं के भविष्य को कुचला जा रहा है। प्रदर्शनकारी छात्रों ने मांगें पूरी न होने पर आगामी दिनों में बिहार बंद की चेतावनी भी दी है। तेजस्वी ने 'एक्स' पर कहा, पीएमसीएच में पटना के लोकतांत्रिक प्रदर्शन के दौरान पुलिस के बर्बर लाठीचार्ज में घायल छात्रों से मिला। 'इमरजेंसी' वार्ड में भर्ती छात्रों को घंटों तक इलाज तक नहीं मिला। अपने अधिकारों और हक की आवाज उठाने वाले प्रदर्शनकारियों पर एके-47 से गोलियां चलाई जा रही हैं और लाठीचार्ज किया जा रहा है। राजद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को दुर्घटनावश मुख्यमंत्री बताते हुए कहा कि उन्हें पुलिस कार्रवाई के लिए छात्रों से तत्काल माफी मांगनी चाहिए। तेजस्वी द्वारा साझा किए गए वीडियो में वह पीएमसीएच में घायल छात्रों से बातचीत करते नजर आए। एक छात्रा ने दावा किया कि अस्पताल लाए जाने के तीन घंटे बाद उसके सिर में टांके लगाए गए। वहीं, एक छात्र ने आरोप लगाया कि प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने उसे निशाना बनाकर पीटा और उसके सिर में 13 टांके लगे। वीडियो में मौजूद एक चिकित्सक ने तेजस्वी से कहा कि सीटी स्कैन में घायल छात्र के सिर में सूजन पाई गई है।

सुप्रीम कोर्ट का केंद्र को 2 हफ्ते का अल्टीमेटम

» शीर्ष अदालत बोली- जंकफ़ूड में हेल्थ से समझौता मंजूर नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने पैक्ड फूड के पैकेट के सामने चेतावनी वाले लेबल लगाने के मामले में केंद्र सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा है कि लोगों की सेहत से कोई समझौता नहीं किया जा सकता और विकसित देशों में अपनाए जाने वाले फूड-लेबलिंग स्टैंडर्ड्स को लागू करने में सरकार की हिचकिचाहट पर सवाल उठाए हैं। जस्टिस जेबी पारदीवाला और के विनोद चंद्रन की बेंच ने केंद्र सरकार को इस मुद्दे पर फैसला लेने के लिए दो हफ़्ते का समय दिया है। साथ ही, यह भी साफ़ कर दिया है कि अगर सरकार खुद कोई कदम नहीं उठाती है, तो कोर्ट आगे और निर्देश जारी करने पर विचार करेगा।

भारत में मोटापे को लेकर बढ़ती चिंताओं और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड के तेज़ी से बढ़ते सेवन के बीच कोर्ट ने दखल दिया है। सुनवाई के दौरान, जस्टिस पारदीवाला ने केंद्र के उस तर्क पर सवाल उठाया कि भारत फूड लेबलिंग के अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन नहीं कर सकता। जज ने पूछा, क्या भारत को एक अविकसित देश ही बने रहना चाहिए? उन्होंने कहा कि इस मामले को केंद्र सरकार के विचार के लिए रखा जा रहा है। अदालत ने यह भी कहा कि अगर सरकार खुद इस उपाय को लागू करती है तो बहुत अच्छा है, वरना वह आगे के निर्देश जारी करेगी। यह मामला एनजीओ और आवर हेल्थ सोसाइटी की ओर से दायर एक जनहित याचिका से जुड़ा है। वकील राजीव शंकर द्विवेदी ने इस याचिका में मांग की है कि पैक्ड फूड पर अनिवार्य रूप से फ्रंट-ऑफ-पैक चेतावनी लेबल लगाए जाएं, ताकि उनमें मौजूद चीनी, नमक और सैचुरेटेड फैट की अधिक मात्रा को स्पष्ट रूप से दिखाया जा सके। सुप्रीम कोर्ट ने पहले फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा उठाए गए कदमों पर असंतोष जताया था और कहा था कि अब तक की कवायद से कोई ठोस नतीजा नहीं निकला है।

महुआ मोइत्रा के समर्थन में आए दो और विपक्ष के सांसद

» लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से जांच की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा से पश्चिम बंगाल में देर रात सर्किट हाउस खाली करने के लिए कथित तौर पर कहे जाने को लेकर दो और विपक्षी सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर इस मामले को विशेषाधिकार समिति के पास भेजने की मांग की है। कांग्रेस सांसद के. सुरेश और आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने 14 अगस्त की इस घटना को लेकर बिरला को पत्र लिखा है।

इससे पहले समाजवादी पार्टी के सांसद धर्मेंद्र यादव, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की सुप्रिया सुले, शिवसेना (उबाठा) के अरविंद सावंत और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के सांसद के. राधाकृष्णन भी बिरला को पत्र लिखकर मामले की जांच और इसमें शामिल अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर चुके हैं। मोइत्रा ने इस घटना को लेकर नादिया के जिलाधिकारी श्रीकांत पल्ली, अतिरिक्त जिलाधिकारी नृपेंद्र सिंह और नाजरेथ के उपजिलाधिकारी अनामिका बेरा के खिलाफ अलग से विशेषाधिकार हनन नोटिस दिया है।

धोपेश्वरनाथ मंदिर में भाजपा नेताओं की भिड़ंत

» मेयर उमेश गौतम और कैंट विधायक संजीव अग्रवाल में गाली-गलौज व हाथापाई

» अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं : पूरनलाल लोधी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बरेली। धोपेश्वरनाथ मंदिर के बाहर सावन के अंतिम सोमवार को भाजपा की अंदरूनी खींचतान खुलकर आ गई। जलाभिषेक के लिए पहुंचे मेयर उमेश गौतम और कैंट विधायक संजीव अग्रवाल के बीच तीखी नोकझोंक के बाद गाली-गलौज और हाथापाई हो गई। पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में हुए इस घटनाक्रम ने स्थानीय भाजपा की गुटबाजी को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े कर दिए हैं। सोमवार सुबह करीब 11 बजे मंदिर के बाहर दोनों नेताओं का आमना-सामना हुआ।

बातचीत के दौरान किसी बात को लेकर विवाद बढ़ा और देखते ही देखते दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस होने लगी। आरोप है कि बात अपशब्दों तक पहुंची और फिर धक्का-मुक्की की नौबत आ गई। मौके पर मौजूद लोगों ने बीच-बचाव कर दोनों पक्षों को अलग कराया। उस दौरान भाजपा ब्रज क्षेत्र अध्यक्ष पूरनलाल लोधी, महानगर अध्यक्ष अधीर सक्सेना, मेयर उमेश गौतम, कैंट विधायक संजीव अग्रवाल, पूर्व सांसद धर्मेंद्र कश्यप समेत कई कार्यकर्ता मौजूद बताए गए। वहीं अध्यक्ष ने कहा है कि अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पूरनलाल लोधी की पोस्ट ने बढ़ाई हलचल

मंदिर के बाहर विवाद की चर्चा थमी भी नहीं थी कि ब्रज क्षेत्र अध्यक्ष पूरनलाल लोधी की सोशल मीडिया पोस्ट ने संगठन के भीतर हलचल और बढ़ा दी। उन्होंने स्पष्ट संदेश दिया कि भाजपा में गुटबाजी और अनुशासनहीनता के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने विवाद को हवा देने वालों के साथ सोशल मीडिया पर उसे लाइक, शेयर और कमेंट करने वालों तक का संज्ञान लेने की बात कही। लोधी की इस सख्त टिप्पणी को मंदिर विवाद के बाद संगठन के भीतर अनुशासन कायम करने के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि, उन्होंने अपनी पोस्ट में किसी नेता का नाम नहीं लिया।

सार्वजनिक भिड़ंत से संगठन की किरकिरी

धार्मिक आयोजन के दौरान पार्टी के दो प्रमुख जनप्रतिनिधियों के बीच कथित गाली-गलौज और हाथापाई ने भाजपा की स्थानीय राजनीति में चल रही खींचतान को फिर उजागर कर दिया है। सवाल यह भी उठ रहा है कि जब पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि मौके पर मौजूद थे, तो विवाद इस हद तक कैसे पहुंच गया। फिलहाल मेयर उमेश गौतम और विधायक संजीव अग्रवाल की ओर से घटनाक्रम पर कोई विस्तृत आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। पार्टी स्तर पर भी मामले में कार्रवाई को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है।

टेस्ट रैंकिंग में मिचेल स्टार्क बने नंबर 1 गेंदबाज

» बुमराह का दबदबा हुआ खत्म, पंत-कमिंस और लियोन ने भी लगाई छलांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। आईसीसी की ताजा टेस्ट रैंकिंग में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। ऑस्ट्रेलिया के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने पहली बार टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में नंबर-एक स्थान हासिल कर लिया है। बांग्लादेश के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के दम पर स्टार्क ने जसप्रीत बुमराह को शीर्ष स्थान से हटा दिया। वहीं, ऋषभ पंत ने छह पायदान की छलांग लगाकर बल्लेबाजों की रैंकिंग में संयुक्त रूप से सातवां स्थान हासिल कर लिया है।

मिचेल स्टार्क के लिए यह उपलब्धि बेहद खास है। 36 वर्षीय तेज गेंदबाज ने अपने 15 साल लंबे टेस्ट करियर में पहली बार आईसीसी टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल किया है।

बांग्लादेश के खिलाफ मैके में खेले गए दूसरे टेस्ट में स्टार्क ने 10 विकेट चटकाए थे। इस प्रदर्शन ने स्टार्क को रैंकिंग में दो पायदान ऊपर पहुंचाया और उन्होंने बुमराह तथा न्यूजीलैंड के मैट हेनरी को पीछे छोड़ दिया। स्टार्क लंबे समय से दुनिया के शीर्ष गेंदबाजों में शामिल रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया के दूसरे गेंदबाजों ने भी रैंकिंग में बढ़त हासिल की है। कप्तान पैट कमिंस बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट में छह विकेट लेने के बाद एक स्थान ऊपर चढ़कर चौथे नंबर पर पहुंच गए हैं। वहीं अनुभवी ऑफ स्पिनर नाथन लियोन ने दो स्थान की छलांग लगाई है और अब वह 10वें नंबर पर हैं।

वहीं पंत ने छह स्थान की छलांग लगाकर बल्लेबाजों की रैंकिंग में संयुक्त रूप से सातवां स्थान हासिल कर लिया। उनके साथ ऑस्ट्रेलिया के मार्नस लाबुशेन भी संयुक्त सातवें स्थान पर हैं। पंत के अलावा केएल राहुल पांच स्थान ऊपर चढ़कर 30वें पायदान पर पहुंच गए हैं। टेस्ट बल्लेबाजों की शीर्ष रैंकिंग में हैरी ब्रूक नंबर-1 पर बने हुए हैं, जबकि उनके हमवतन जो रूट दूसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ और ट्रैविस हेड क्रमशः तीसरे और चौथे नंबर पर हैं।

ऑलराउंडरों में जडेजा का राज कायम

टेस्ट ऑलराउंडरों की रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर कोई बदलाव नहीं हुआ है। भारत के अनुभवी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा नंबर-1 पर अपना कब्जा बरकरार रखे हुए हैं। पैट कमिंस एक स्थान ऊपर चढ़कर सातवें नंबर पर पहुंच गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के कैमरन ग्रीन भी एक पायदान ऊपर जाकर संयुक्त रूप से 17वें स्थान पर हैं, जबकि ओली रॉबिन्सन ने पांच स्थान की छलांग लगाकर 23वां स्थान हासिल किया है।

सहारनपुर देहात में इंडिया गठबंधन की लहर

क्षितिजकांत

बेबाक बोल जनता खोल रही पोल

सहारनपुर देहात विस की ग्राउंड रिपोर्ट

» भाजपा के खिलाफ भरा है जनाक्रोश

» जंतर-मंतर लाठीचार्ज से लेकर टूटी सड़कों पर बोले लोग

» हठधर्मी सरकार हटनी चाहिए, सत्ता परिवर्तन तय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सहारनपुर देहात। सहारनपुर देहात विधानसभा में इस बार माहौल बदला-बदला नजर आ रहा है। जंतर-मंतर पर छात्रों पर हुए लाठीचार्ज से लेकर गांव की टूटी सड़कें और ठप कारोबार तक, हर मुद्दे पर जनता भाजपा सरकार के खिलाफ मुखर हो रही है। लोगों का कहना है - इस बार सत्ता परिवर्तन तय है।

युवाओं में उबाल- राहुल का संघर्ष पसंद आ रहा है

स्थानीय युवक सोनू ने कहा,जंतर-मंतर पर छात्रों पर हुए लाठीचार्ज को लेकर भाजपा के खिलाफ जनता में

जबरदस्त आक्रोश है। यह आक्रोश सहारनपुर देहात में जबरदस्त तरीके से फैल चुका है। जनता अब राहुल गांधी को पसंद कर रही है, राहुल गांधी का संघर्ष लोगों को काफी पसंद आ रहा है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए लोकेंद्र कुमार ने कहा, जो लोग राहुल गांधी को पप्पू कहते थे, वह अब राहुल गांधी की ताकत को समझ गए हैं। हठधर्मी की सरकार हटनी चाहिए भैया। यहां इंडिया गठबंधन जीत दर्ज करेगा।

कारोबार ठप, रोजगार खत्म

कारोबारी इंतजार ने सरकार की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार हमने देख ली, इसमें बहुत परेशानी है। रोजगार खत्म हो गया, सब कुछ इसमें ठप हो गया है। हमारा कारोबार भी एकदम ठप हो गया है। अगर इंडिया गठबंधन हो गया तो हमारा वोट इंडिया गठबंधन को जाएगा। नौशाद ने भी यही बात दोहराई, इंडिया गठबंधन ने बहुत काम किया है, कांग्रेस की जब सरकार थी तो हमें लाभ मिला है। इस बार पब्लिक सत्ता परिवर्तन चाहती है।

मोहद्दीपुर में विकास गायब-घुटनों तक पानी

वहीं मोहद्दीपुर गांव में विकास की पोल खुलती दिखी। ग्रामीण शाहिद ने कहा, हमारे गांव

मोहद्दीपुर की सड़क एकदम टूटी हुई है। बारिश होती है तो घुटनों तक पानी भर जाता है। हमारा परमानेंट रास्ता खराब हो गया है, गांव से बाहर निकलना मुश्किल है। प्रशासन केवल टाल-मटोल करता है, कोई काम नहीं करता। शाहिद ने कहा, चाहे बीजेपी रहे, चाहे सपा रहे, चाहे बीएसपी रहे, हमें सिर्फ विकास चाहिए। व्यापार की वजह से रोज दूर से होकर आना पड़ता है, हमारा मुख्य मुद्दा सड़क है।

प्राचीन और पौराणिक काल

यह क्षेत्र बुद्ध के समय महाकौशल के राजा प्रसेनजित् के अधीन था। बाद में यह कुरु संघराज्य के अंतर्गत यौधेय, उशीनर और स्रुघ्न जनपदों में बंटा हुआ था। स्रुघ्न जनपद पूर्व में गंगा नदी और उत्तर में पहाड़ियों तक फैला था, जिसके मध्य यमुना नदी बहती थी। सहारनपुर शहर की स्थापना लगभग 1340 ईस्वी में हुई थी। इसका नाम सूफी संत शाह हरन चिश्ती के नाम पर रखा गया।

रोहिल्ला और मुगल काल

मुगलों और बाद में रोहिल्ला सरदारों का इस क्षेत्र के ग्रामीण और शहरी हिस्सों पर प्रभाव रहा। यहाँ के कई पुराने किले और इमारतें (जैसे रोहिल्ला राजाओं से जुड़े स्थल) इस काल की गवाही देते हैं।

ब्रिटिश काल और 1857 की क्रांति

वर्ष 1803 में एंग्लो-मराठा युद्ध के बाद यह क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया। 1804 तक अंग्रेजों ने मराठा और सिख प्रतिरोध को समाप्त कर पूरा नियंत्रण ले लिया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सहारनपुर के स्थानीय नेताओं, सैनिकों और आम लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया था।

भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान

सहारनपुर देहात और जिला मुख्य रूप से अपनी उपजाऊ भूमि, कृषि और लकड़ी की नक्काशी के कुटीर उद्योग के लिए विश्व प्रसिद्ध है। ऐतिहासिक माँ शाकुम्भरी देवी शक्तिपीठ भी इसी जनपद के जसमोर क्षेत्र के पास स्थित है।

सहारनपुर देहात विस एक नजर

सहारनपुर देहात (सहारनपुर ग्रामीण) उत्तर प्रदेश की विधानसभा संख्या 4 का एक महत्वपूर्ण निर्वाचन क्षेत्र है, जहाँ वर्तमान विधायक समाजवादी पार्टी के आशु मलिक हैं। यह सहारनपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में आता है। इस सीट का अधिकांश हिस्सा ग्रामीण है। (पिछले विजेता) 2022-आशु मलिक (समाजवादी पार्टी) 2017-मंसूर अख्तर (कांग्रेस) 2012-जगपाल सिंह (बहुजन समाज पार्टी)

विस गठन

यह निर्वाचन क्षेत्र पहली बार 1955 में परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया था। वर्ष 2008 के परिसीमन आदेश के बाद इसकी वर्तमान स्थिति और स्वरूप तय किया गया। यह उत्तर प्रदेश की विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में प्रमुख स्थान रखती है।

आंध्र प्रदेश में बस की टक्कर से सात की मौत, आठ घायल

ऑटो-रिक्शा से बर्थडे पार्टी से लौट रहे थे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अमरावती। आंध्र प्रदेश के पलनाडू जिले में गुरुवार तड़के एक प्राइवेट बस और ऑटो-रिक्शा की टक्कर हुई। इसमें कम से कम सात लोगों की मौत हो गई। वहीं, आठ अन्य घायल हो गए। मरने वालों में छह महिलाएं शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि यह हादसा पलनाडू जिले के चिलकालूरिपेट में अड्डा रोड के पास हुआ।

विजयवाड़ा से तिरुपति जा रही प्राइवेट बस ने ऑटो-रिक्शा को टक्कर मार दी। ऑटो-रिक्शा में तकरीबन 15 लोग सवार थे। उनमें से सात लोगों की मौत हो गई। चार बच्चों समेत आठ अन्य लोग घायल हो गए। घायलों को गुंटूर के सरकारी जनरल अस्पताल और चिलकलुरिपेट सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। मृतकों की पहचान बोंटू बाबू (62), बोंटू मानेम्मा (55), संपूर्णम्मा (70), गंगम्मा (50), लक्ष्मम्मा (75), चौतुपल्ली स्वार्थम्मा (45) और मारियम्मा (45) के रूप में की गई है। पुलिस के अनुसार, पीड़ित चिलकलुरिपेट मंडल के वेलुरु गांव के रहने वाले थे। वे प्रकाशम जिले के कोंडामांजुलुर में एक जन्मदिन की पार्टी से लौट रहे थे। चार लोगों की मौत मौके पर ही हो गई। वहीं, दो लोगों की मौत गुंटूर के सरकारी जनरल अस्पताल में और एक की मौत चिलकलुरिपेट सरकारी अस्पताल में हुई।

मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने इस भयानक सड़क हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि घायलों को हर संभव बेहतर इलाज मिले और उनकी सेहत पर लगातार नजर रखी जाए। उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने भी सड़क हादसे पर दुख जताया। उन्होंने जिला अधिकारियों से बात की और उन्हें घायलों के लिए बेहतर इलाज सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

ग्लेशियर का टुकड़ा गिरने से मची नेपाल में तबाही

अब तक अचानक बाढ़ से 165 लोगों की मौत हो चुकी है, बचाव और राहत कार्य जारी है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नेपाल में आई अचानक भीषण बाढ़ से तबाही मची हुई है। इस जल प्रलय की वजह से इमारतें, गांव के गांव, सड़कें, पुल सभी बह गए हैं। इस बाढ़ से 165 लोगों की मौत हो चुकी है और हजार से ज्यादा लोग लापता हैं। राहत-बचाव कार्य जारी है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक नेपाल में आई बाढ़ की वजह भूकंप नहीं बल्कि ग्लेशियर का ऊंचाई से गिरना है।

हालांकि चीन ने ग्लेशियर के टूटने के लिए नेपाल की तरफ भूकंप को जिम्मेदार ठहराया है। नेपाल में चीन के राजदूत झांग माओमिंग ने रसुवा में आई भीषण बाढ़ पर नेपाल के चैनल से बात की। उन्होंने कहा कि कठिन समय में हम नेपाल के साथ मजबूती से खड़े हैं। वर्तमान में उपलब्ध प्रारंभिक जानकारी है कि नेपाली पक्ष में एक भूकंप आया, जिससे बर्फ का हिमस्खलन हुआ और उसके बाद भूस्खलन हुआ, जिससे

ग्यिरोंग-रसुवागढ़ी सीमा क्षेत्र के नेपाली और चीनी दोनों पक्षों में महत्वपूर्ण हताहत हुए और लोग लापता हो गए। लैंगटांग लिरुंग पर्वत के उत्तर मुख पर लगभग 5200 मीटर ऊंचाई पर ग्लेशियर का निचला हिस्सा टूटकर लगभग 1200 मीटर नीचे घाटी में गिरा। ये मलबा लेंडे खोला नदी को अवरुद्ध कर गया, जिससे अस्थायी बांध बना। बांध टूटने से पानी, कीचड़, चट्टानों और मलबे की विशाल लहर नीचे की ओर दौड़ पड़ी। लेन्दे खोला तिब्बत से निकलने वाली एक सहायक नदी है, जो नेपाल-चीन सीमा के पास रसुवागढ़ी और तिमुरे के आसपास भोटेकोशी नदी में मिलती है। ग्लेशियर के ढहने या आइस-रॉक एवलांच से बड़ी मात्रा में बर्फ, चट्टान और मलबा इसी लेन्दे खोला में गिरा। इससे नदी में अचानक तेज बहाव पैदा हुआ।

मजाक और हंसी का पात्र बनती जा रही है संसद: चिदंबरम

» कांग्रेस नेता ने उचित चर्चा के 12 बिल पास किए जाने की आलोचना की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सीनियर कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद पी. चिदंबरम ने गुरुवार को मॉनसून सत्र के दौरान संसद के कामकाज की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि सत्र में कोई सार्थक कामकाज नहीं हुआ और केंद्र सरकार ने बिना पर्याप्त चर्चा के ही बिल पास कर दिए। चेन्नई में कांग्रेस की एक बैठक में बोलते हुए, चिदंबरम ने कहा कि संसद की तुलना में राज्य विधानसभाओं में बहस ज़्यादा असरदार होती है।

चिदंबरम ने बिना उचित चर्चा के 12 बिल पास किए जाने की भी आलोचना की और कहा कि दिन-ब-दिन संसद मज़ाक और हंसी का पात्र बनती जा रही है उन्होंने इसके लिए तमिलनाडु विधानसभा का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु विधानसभा की कार्यवाही देखने के बाद, कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे सांसद के बजाय विधायक होना चाहिए था। उन्होंने सवाल उठाया कि पिछले 12 सालों में संसद में अहम राष्ट्रीय मुद्दों पर स्थगन प्रस्ताव क्यों नहीं लाए गए, क्या इस दौरान कोई गंभीर मामला नहीं था? मॉनसून सत्र का जिक्र करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली में छात्रों के विरोध-प्रदर्शन - जिसमें पुलिस की कार्रवाई हुई और एक छात्र की एक आँख की रोशनी चली गई - पर स्थगन प्रस्ताव के ज़रिए चर्चा नहीं की गई। फॉरेन कंट्रीब्यूशन (रेगुलेशन) एक्ट बिल के बारे में उन्होंने आरोप लगाया कि प्रस्तावित संशोधनों से उन संगठनों पर बुरा असर पड़ेगा जो सामाजिक कार्यों के लिए विदेशी चंदा लेते हैं। शिवगंगा के एक कैथोलिक बिशप का उदाहरण देते हुए, जिनका FCRA रजिस्ट्रेशन तीन साल पहले रद्द कर दिया गया था, चिदंबरम ने कहा कि उन्होंने बिशप को कानूनी रास्ता अपनाने की सलाह दी थी। उन्होंने दावा किया कि इन संशोधनों का मकसद ईसाई और मुस्लिम संगठनों को निशाना बनाना है। उन्होंने कहा कि हजारों ईसाई बिशप, पादरी और अन्य लोगों ने भारतीय समाज के लिए काम किया है और बहुत बड़ी सेवा की है।

कानपुर में ट्रेनिंग एयरक्राफ्ट क्रैश, दोनों पायलट की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। ग्वालटोली थाना क्षेत्र के नत्था पुरवा में गुरुवार सुबह ट्रेनिंग के दौरान चार सीटर विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर जमीन पर गिर गया। हादसे में विमान सवार दोनों पायलटों की मौत हो गई।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों में हड़कंप मच गया। पुलिस कमिश्नर रघुवीर लाल भी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण किया। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक विमान ने सुबह करीब 11.20 बजे कानपुर कैंट क्षेत्र से उड़ान भरी थी। बताया जा रहा है कि विमान चार सीटर था और ट्रेनिंग उड़ान पर था। उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही विमान नत्था पुरवा क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान के जमीन पर गिरते ही तेज आवाज हुई और आसपास के लोगों की भीड़ मौके पर जुट गई। हादसे में जान गंवाने वाले पायलटों की पहचान अभिषेक पुजारी निवासी कर्नाटक और सुमित भाटिया निवासी गुजरात के रूप में हुई है। दोनों की मौके पर ही मौत होने की सूचना है। पुलिस ने घटनास्थल को घेरकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया। विमान टेकनम कंपनी का बताया जा रहा है। दुर्घटना के कारणों का अभी स्पष्ट पता नहीं चल सका है। तकनीकी खराबी, मौसम अथवा अन्य कारणों की जांच की जा रही है। हादसे की सूचना संबंधित विमानन अधिकारियों को भी दी गई है। दुर्घटना के बाद मौके पर पुलिस, प्रशासन और अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 । Email: daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा